thearyasamaj.org

ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

मई, 2014

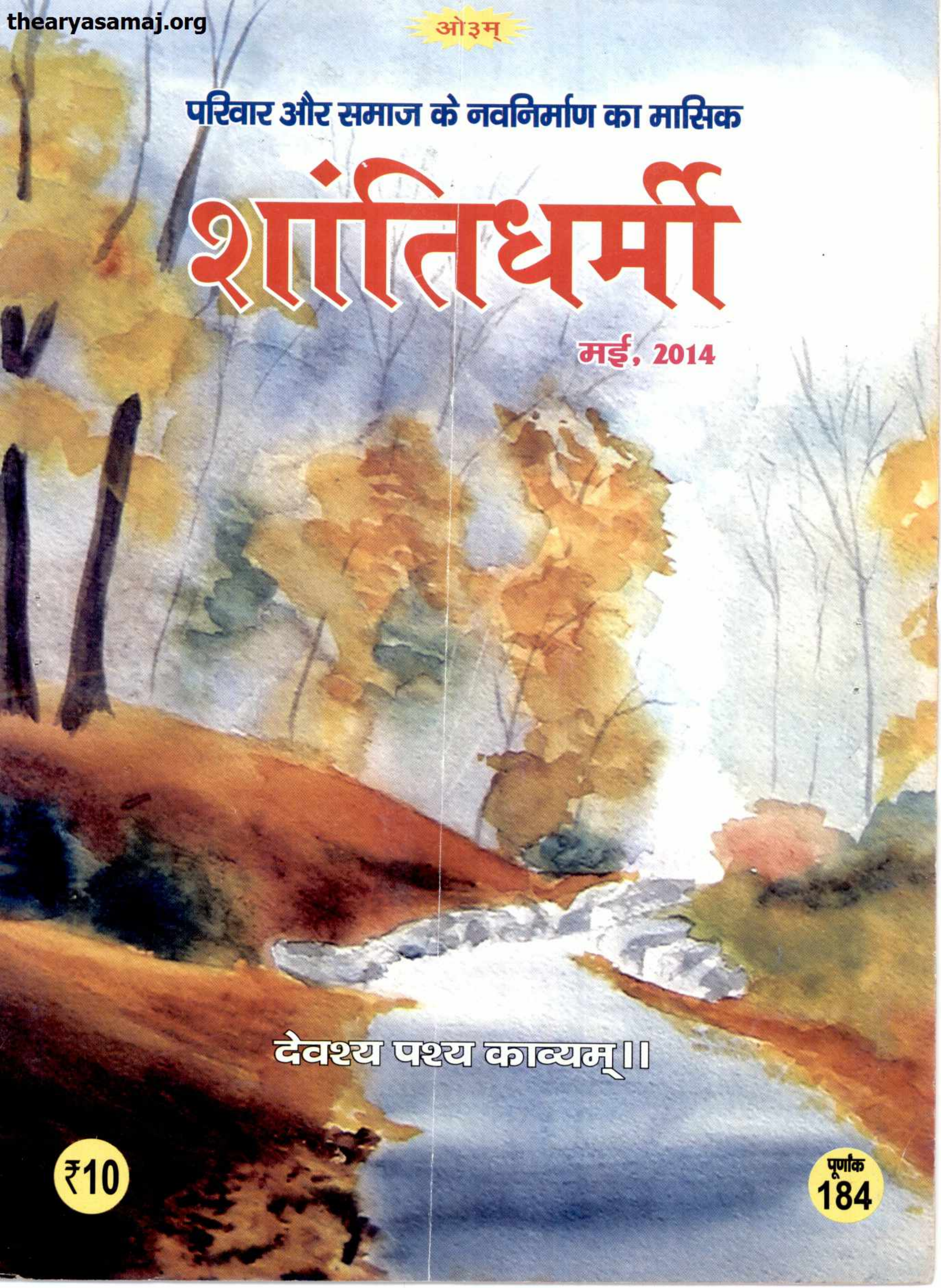

देवस्य पश्य काव्यम्।।

₹10

पूर्णांक 184

thearyasamaj.org

आनंद रूहेलखंड मेडिकल कॉलेज में 'मानवीय नैतिक मूल्य व चिकित्सक' विषय पर १६ अप्रैल २०१४ को अंतर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी का व्याख्यान हुआ।

केरल में प्रथम आर्ष गुरुकुल 'पं० लेखराम आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय' की स्थापना। विधिवत् उद्‌घाटन ८ जून २०१४ को। अनेक आर्य विद्वान् और संन्यासी पधारेंगे। सम्पर्क सूत्र : के.एम. राजन, आर्य प्रचारक, केरल, मोबाइल : ०९५९६२५२६०६५

शान्तिधर्मी परिसर में आयोजित पूर्णिमा यज्ञ के दृश्य।

thearyasamaj.org

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

मई २०१४

वर्ष : १६ अंक : ४ वैशाख २०७१ विक्रमी
सृष्टि संवत्-१९६०८५३११५, दयानन्दाब्द : १९२

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५६६-६४३४०)
संयुक्त सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०९४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य

एक प्रति	: १०.०० रु०
वार्षिक	: १००.०० रु०
आजीवन	: १०००.०० रु०

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द-१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२-५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

प्रेरणा स्तम्भ

मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।

–महर्षि दयानन्द

क्या? कहाँ?....

आलेख

समय का सदुपयोग	८
सम्राट् युधिष्ठिर की राजधर्म जिज्ञासा	९
युवा चरित्र को बचाएँ : भारत को विश्वगुरु बनाएँ	११
स्वतंत्रता संग्राम के अनजाने योद्धा	१५
चिन्ता चिता समान है	२०
संकल्प शक्ति का चमत्कार (तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु)	२१
किसके गीत गाएँ या किसकी स्तुति करें!	२३
स्वास्थ्य के लिए अति उपयोगी बादाम (स्वास्थ्य चर्चा)	२५
अनाथालय में हो रहा धर्मान्तरण (अन्ततः)	३४

कहानी/प्रसंग : देवी मैया का प्रकोप : १८, मुंशी प्रेमचन्द की सादगी-२७, संस्कारों का प्रभाव- २७ लक्ष्मी का दुःख -२७

कविताएँ- १२, १३, २१

स्तम्भ-आपकी सम्मतियाँ ५, अनुशीलन, सोम सरोवर ६ चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ७, व्यक्तित्त्व निर्माण-८, बाल वाटिका २६, भजनावली २८, समाचार सूचनाएँ

वेद-विचार

सामवेद आग्नेय पर्व

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो।
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः।।९९।।

बल के पुत्र वेद विद्या के निधि धन के स्वामी भगवन्!
हमको बहुत अन्न यश वैभव गोदुग्धादिक दो भगवन्!!
कीर्ति तुम्हारी गावें पावें हम तेजस्वी बल भगवन्!
जग में जगमग हों शुभ मग[1] में पग रख हर्षावें भगवन्!!

पदार्थ : १=मार्ग

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

thearyasamaj.org

आत्महत्या-- नहीं!

❑ चन्द्रभानु आय

अभी हाल ही में एक समाचार आया कि एक १२ वर्षीय बच्चे ने अपने स्कूल में पंखे से लटक कर आत्महत्या कर ली। मृत्यु पूर्व लिखे गए पत्र में उसने अपनी मृत्यु का जिम्मेवार अपनी शिक्षिका को बताया जो उसे स्कूल में कम्प्यूटर नहीं चलाने देती।

यह एक हृदयविदारक समाचार है। यह समाचार पत्र के एक छोटे से कोने में छपा, किसी का ध्यान गया, किसी का नहीं। कुछ लोगों को सजा हो सकती है, बाल अधिकारों पर चर्चा हो सकती हैं और कुछ दिन में लोग इस बात को भूल जाएँगे। इस प्रकार की घटनाओं के समाचार निरन्तर आते हैं, जब लोग किसी छोटी-सी बात पर तैश में आकर अपने अमूल्य जीवन को समाप्त कर लेते हैं। यह छोटा बच्चा भी-- और आत्महत्या करने वाले युवक युवतियाँ भी-- इस बात को नहीं जानते कि उनके लिए सही क्या है और गलत क्या है! वे अपने माने हुए सच को ही सच समझते हैं और उसको पूरा न होते देखकर अपनी जीवन लीला को समाप्त करना ही उचित समझते हैं।

आजकल के मनोविज्ञानियों के अनुसार आत्महत्या का विचार उठना एक मनोरोग है। प्राचीन विचारकों ने इस पर ज्यादा गम्भीरता से विचार किया है। हमारे मन में किस प्रकार के विचार उठते हैं- इसके मूल में सत्त्व, रज और तम- तीन गुण होते हैं। रजोगुण से उत्पन्न होने वाला काम (कामनाएँ) जब पूरा नहीं होता तो क्रोध उत्पन्न होता है। गीता में इस पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। क्रोध के काबू में आया हुआ व्यक्ति अपने काबू में नहीं रहता। वह औरों की भी हानि कर सकता है और अपनी भी। पर अपनी हानि करने का कारण बनता है उसका असामाजिक स्वभाव। जिन बच्चों की बचपन से ही वे सब इच्छाएँ पूरी की जाती हैं जो वह दूसरों का हक दबाकर करना चाहता है, तो उसका स्वभाव असामाजिक हो जाता है। वह सामाजिक नियमों को स्वीकार नहीं कर सकता। परिस्थितियाँ तो सदा एक समान नहीं रहतीं, जब उसकी इच्छाएँ पूरी नहीं हो पाती तो वह जीवन को व्यर्थ समझने लगता है।

लेकिन १२ साल के बच्चे को यह विचार किसने दिया कि उसे आत्महत्या कर लेनी चाहिए? वह अपने अभिभावकों से बात कर सकता था। उसके अभिभावक अध्यापकों से बात कर सकते थे। वह स्कूल बदलने की जिद कर सकता था। लेकिन उसने केवल आत्महत्या का मार्ग चुना। इसके पीछे के पारिवारिक और सामाजिक कारणों पर हमें गंभीरता से विचार करना होगा। इस प्रकार के हिंसा, क्रूरता के संस्कार बच्चों में टेलीविजन के माध्यम से आ रहे हैं। कम्प्यूटर खेलों के माध्यम से आ रहे हैं। और सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि हम इस ओर से बिल्कुल आंख मूंद कर बैठे हैं। हम अपने परिवार के लिए सब तरह की योजनाएँ बनाते हैं- मकान की, व्यवसाय की, नौकरी की, रोजगार की-। कहते हैं कि मां बाप बच्चों के लिए सब कुछ करते हैं-- पर उनके संस्कारों के लिए कुछ नहीं करते। इसीलिए संसार में समृद्धि बढ़ रही है, खर्च करने की शक्ति बढ़ रही है लेकिन विषाद, तनाव, कुण्ठाएँ भी बढ़ रही हैं। काम करने के लिए तरह तरह की मशीनें आ गई हैं, फिर भी व्यस्तता बढ़ रही है। अस्पताल, औषधियों की भरमार हो रही है फिर भी बीमारियाँ बढ़ रही हैं। कहते हैं शिक्षा का युग है, फिर भी पाखण्ड और अंधविश्वास बढ़ रहे हैं। कहीं न कहीं कोई कमी तो अवश्य है समाज में भी और उसकी ईकाई परिवार में भी। मुझे पं० शोभाराम 'प्रेमी' की पँक्तियाँ याद आ रही हैं--

एक डॉक्टर की दवाई, बहुत वर्षों तक खाई।
न उन्नीस बीस मर्ज में फर्क कुछ दिया दिखाई।।

सब कुछ हो रहा है, पर जिसके लिए सब कुछ हो रहा है उसके लिए कुछ नहीं हो रहा है। जब मनुष्य मनुष्य ही नहीं रहेगा तो उसके लिए किये जा रहे ये तमाम भौतिक चकाचौंध के साधन किस काम आएँगे? इसलिए हमें मनुष्य बनाने की योजनाओं पर कार्य करना ही होगा। धर्म मनुष्य को मनुष्य बनाता है, उसे पशुओं की श्रेणी से अलग करता है। सब प्रकार की शिक्षा से ज्यादा महत्त्व धर्म की शिक्षा को देना होगा। महर्षि मनु के अनुसार धर्म का पहला ही लक्षण 'धृति' है। उस मानव धर्म को पाठ्यक्रमों में सर्वोपरि स्थान देना होगा। और सबसे बढ़कर उस शिक्षा प्रणाली को स्थान देना होगा जो मानव का निर्माण करती है। मनुष्य के तीन शिक्षक- माता, पिता और आचार्य को अपने कर्त्तव्यों का पालन करना होगा। बच्चे को बोलना-चालना, बाँटकर खाना, दूसरों का सम्मान करना, बड़ों की आज्ञा का पालन करना, धैर्य रखना आदि उत्तम शिक्षाएँ माँ से बढ़कर कोई नहीं दे सकता। माता, पिता और आचार्य का आचरण शुद्ध, पवित्र हो। घरों में टी वी शो के स्थान पर नियमित स्वाध्याय हो, संध्या हो, जिससे मनुष्य मनुष्य बने। उसकी आत्मिक शक्ति का विकास हो, जिससे वह अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेकर संघर्ष करने की सोचे, आत्महत्या करने की नहीं।

thearyasamaj.org

आपकी सम्मतियाँ

शांतिधर्मी मार्च २०१४ अंक की प्राप्ति के पश्चात् पत्र एवं सम्पादक मण्डल के प्रयासों पर साधुवाद देने की ललक का संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। छोटे कलेवर में यह प्रकाशन शारीरिक ऊर्जा, मानसिक सन्तुलन एवं आध्यात्मिक प्रेरणा के माध्यम के रूप में मेरे हाथ में आया जिसे आद्योपान्त पढ़कर सुख एवं शांति का अनुभव किया। सभी आलेख मन को तथा मस्तिष्क को भी उद्वेलित करते हैं। कुछ करने के लिए प्रेरित करते हैं और भावनात्मक लगाव की ओर बढ़ने का मार्ग प्रस्तुत करते हैं। 'अपना-अपना नजरिया' (प्रतीक सोनी) ने मन मोह लिया। सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल एवं सहयोगी वृन्द को साधुवाद एवं शुभकामनाओं सहित!

डॉ० मदनमोहन वर्मा
एस बी-९७, शास्त्री नगर,
गाजियाबाद-२०१००२ (उ० प्र०)

शांतिधर्मी का अप्रैल अंक मिला, साधुवाद! शांतिप्रवाह 'सुख का मूल धर्म' शिक्षाप्रद तथा अनुकरणीय लगा। इसमें कोई शक नहीं कि धर्म सुख, शांति, प्रसिद्धि, समृद्धि देने वाला तथा लोक परलोक संवारने वाला है। आजकल लोग धर्म पर चलने का ढोंग करते हैं, अतः उनका न तो लोक संवरता है न परलोक सुधरता है। धर्म पर चलने का अर्थ है- मन वचन कर्म से एक होना, परिश्रम तथा ईमानदारी से कमाकर अपनी तथा परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करना; बुजुर्गों, बीमारों, लाचारों की सेवा और सहायता करना, परहित में कार्य करना, निंदा, चुगली, पराई स्त्री तथा पराए धन से दूर रहना तथा आत्मसंयम करना। हमारे धर्म ग्रंथों में इसी प्रकार की बातें धर्म के आचरण के लिए कही गई हैं। गुरु नानकदेव जी ने कहा है- 'कीरत करो अते वंड के खाओ।' इसके अलावा दया धर्म का मूल है। हमारे यहाँ धर्म के उन्माद के नाम पर क्रूर हत्याएँ कर दी जाती हैं। अबलाओं की लाज लूट ली जाती है, मासूम बच्चों का कत्ल कर दिया जाता है। दिल्ली में गुरु तेगबहादुर जी के सिर को धड़ से अलग कर देने को कौन सा धर्म अच्छा कहेगा? यदि धर्म के स्वरूप को समझकर उस का आचरण किया जाए तो सचमुच वह सुख का मूल है। 'चाणक्य नीति' और 'अमृत वचनावली' प्रेरक और ज्ञानवर्धक हैं। नरेन्द्र आहूजा का लेख 'झूठ का मकड़जाल' झूठ की हानियों का निर्देश करते हुए सत्य व्यवहार की प्रेरणा देता है। डॉ० कृष्ण गोपाल का लेख 'बाबा साहेब के विचारों का अध्ययन जरूरी' नई जानकारियाँ देने वाला और कई शंकाओं का समाधान करने वाला है। डॉ० कैलाश निगम और डॉ० महेशचन्द्र त्रिपाठी की कविताएँ पसंद आईं। स्वास्थ्य चर्चा भी उपयोगी है। बालवाटिका की विभिन्न रचनाएँ पसन्द आईं। पुनः बधाई।

प्रो० श्यामलाल कौशल
९७५-बी/२०, ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१

अप्रैल अंक का मुखपृष्ठ बहुत अच्छा लगा। अग्रलेख 'आर्य आक्रमण--' सन्तोषजनक है। जो लोग विचारधारा के कारण इस असत्य को साठ साल से थोंपते आ रहे हैं कि आर्य नाम की किसी जाति ने इस देश पर आक्रमण किया था, उनका मुँह डॉ० रामविलास शर्मा जैसे प्रख्यात बुद्धिजीवी का स्थापना से भी बंद नहीं होगा। उनको ज्यादा प्रयास करने की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे इस झूठ को पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से देशवासियों के मन में घुसेड़ चुके हैं। फिर भी असत्य का विरोध तो होना ही चाहिए। डॉ० अम्बेडकर के बारे में प्रकाशित लेख हमारे समाज की कई भ्रांतियों को दूर करता है। सामाजिक उत्थान में उनके योगदान से तो प्रायः लोग परिचित हैं, पर विचारधारा के रूप में पूर्ण रूप से नहीं। डॉ० अम्बेडकर को समग्र रूप से जानकर ही उनके अवदान को सही रूप में समझा जा सकता है। शांतिधर्मी की अन्य रचनाएँ सर्वजनोपयोगी और सर्वजनहिताय हैं। इसमें परिवार के सभी सदस्यों के लिए कुछ न कुछ पठनीय, मननीय होता है।

जितेन्द्रप्रताप शास्त्री
ग्रा० पो० पाल्हावास, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

अप्रैल अंक में अन्य सामग्री के साथ श्री रामफल सिंह आर्य की कहानी 'दीक्षा' समाज को नई दिशा देने वाली है। आध्यात्मिकता के नाम पर गुरु घंटालों का प्रभाव हमारे समाज में निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। हमारे समाज में माताएँ बहनें स्वभाव से ही धार्मिक होती हैं, इसलिए वे इनकी चुपड़ी बातों में शीघ्रता से आ जाती हैं। ये लोग अपना बहुत बड़ा तामझाम और साम्राज्य खड़ा कर लेते हैं। लेकिन जब इनकी पोल खुलती है तो पछताने के अलावा कुछ हाथ नहीं आता। इसी प्रकार पूच्छा, झाड़ा आदि के बारे में भी जानकारी प्रकाशित करें।

बंशी लाल चावला,
झोझू कलां, जिला भिवानी

thearyasamaj.org

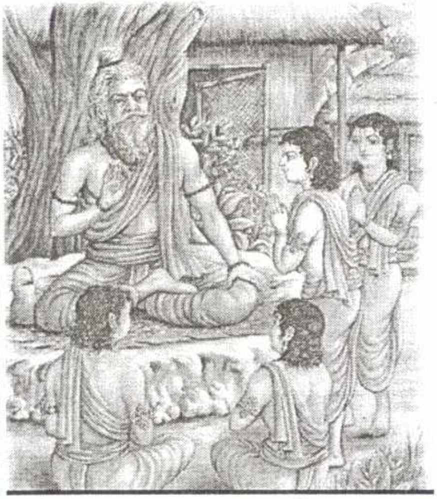

सोम सरोवर (तृतीय खण्ड)

गायत्री छन्दः । षड्ज स्वरः

❒ पं० चमूपति जी

सूर्य का जन्म

अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः।
हिन्वानो मानुषीरपः।।

ऋषिः-निध्रुविः--निश्चित ध्रुव।

(यया धारया) जिस धारा से तू ने (सूर्यम् अरोचयः) सूर्य को रुचिर बनाया है (अया) उसी से (मानुषीः अपः) मानव प्रजाओं को (हिन्वानः) प्रेरित करते हुए (हे संजीवन-रस!) (पवस्व) पवित्रता का प्रवाह लाकर बह निकल।

सूर्य ! प्रतिदिन वही सूर्य ! वही पुराना-लाखों, करोड़ों, अरबों वर्ष का सूर्य नित नया है। हम प्रतिदिन इसे उदय होते देखते हैं पर इसे देखने से अघाते नहीं। सृष्टि की प्रभात-वेला में ऋषियों ने इसका दर्शन किया होगा। वे कितने प्रसन्न हुए होंगे। उनके हृदय किरणों के तारों पर नाच उठे होंगे। आज भी आचार्य अपनी अंगुलि सूर्य की ओर कर ब्रह्मचारी से कहता है-'तत् चक्षुः'-वह आँख है। आँख की आँख ! वह "शुक्रम् उच्चरत्"- वह प्रकाश का, वीर्य का उपदेश करती है। उसमें संजीवन रस है। संसार का जीवन संजीवन के इसी स्रोत का एक तरंग है। किरणों के मिष से इस स्रोत का रस बह बह कर विश्व में जीवन का सञ्चार कर रहा है। कलियों को किरणें चूम जाती हैं। डाल-डाल से आलिंगन कर उसे रोमाञ्चित कर जाती हैं। पशु-पक्षियों को प्रकाश के पलने में मानो झुला रही हैं। यह जीवन का सञ्चार है।

क्या सुर्य जड़ है? हाँ ! कुछ एक धातुओं का रासायनिक मेल। धातुओं में जीवन कहाँ ? जीवन आत्मा का चमत्कार है। 'योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्।' सूर्य की जीवन-शक्ति पुरुष का प्रताप है। इसका तेज, इसका ओज पूर्ण पुरुष की देन है। एक धारा है जो सूर्य में से, चाँद में से, औषधि में से, वनस्पति में से, पशु और पक्षी में से बह रही है। लोक-लोकान्तर शान्त हैं। इसमें रहने वाले सभी प्राणी शान्त हैं। तो फिर मनुष्य अशान्त क्यों है? अकेला मनुष्य चिन्ता में चूर है। सब आज की-इस क्षण की-कल्लोल में मस्त हैं। परन्तु मनुष्य है कि चिन्ता में घुला जाता है। मानव-समाज कलह में है, द्वेष है, ईर्ष्या और मत्सर की भरमार है। इन विप्लवों, आँधियों के रहते चैन कहाँ ?

ऐ सोम-संजीवन की धार! ऐ सूर्य की किरणों! मनुष्य जाति की हृदय-कलिका तुम्हारे चारु-चुम्बन से वञ्चित क्यों है? क्या कोई पवित्रता की-निष्काम धार्मिकता की-हिलोर मानव-जीवन की नौका तूफानों के लिए नहीं है?

आज तो जैसे नया सूर्य उदित हुआ। उषा के प्रकाश की छटा आज कुछ अपूर्व-सी दीख पड़ती है। दिशाओं की चिट्टी चादरों पर एक नया सुनहलापन-सा छा रहा है। आकाश में, पृथिवी पर एक नई ज्योति का आगमन-सा प्रतीत हो रहा है। वृक्षों ने, वनों ने, हरी-हरी घास ने एक लाली-सी धारण की है। कोंपलों के मुख से कोई बोल रहा है। कोकिलों की कूक में जगज्जननी की नई प्रसव-पीड़ा की सी ध्वनि सुनाई देती है।

प्रभो! यह क्या होने को है? क्या यह सोम का जन्म है? मानवीय प्रजा को पवित्र करने वाले, सोये समाज में नयी स्फूर्ति लाने वाले सोम का? धर्म-मेघ के पवित्र रस का? भक्ति का? मंगल का? स्नेह का? पारस्परिक प्रेम का? नव-जीवन का?

thearyasamaj.org

चाणक्य-नीति

षष्ठः अध्यायः
(क्रमागत)

इन्द्रियाणि च संयम्य वकवत् पण्डितो नरः।
देशकालबलं ज्ञात्वा सर्वकार्याणि साधयेत्।।१६

बगुले से कौन सा गुण ग्रहण करे? बगुला एकाग्र होकर अपना कार्य साध लेता है उसी प्रकार बुद्धिमान मनुष्य अपनी इन्द्रियों को वश में करके, स्थान, समय और अपनी शक्ति का विचार करके अपने सभी कार्यों को पूरा कर सकता है।

प्रत्युत्थानं च युद्धं च संविभागं च बन्धुषु।
स्वयमाक्रम्य भुक्तं च शिक्षेच्चत्वारि कुक्कुटात्।।१७

मुर्गे से चार बातें सीख लेनी चाहिएँ- १= प्रत्युत्थान=प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त्त में उठना; २=उसकी युद्धनीति। युद्ध के समय वह पूरी शक्ति से लड़ता है। ३= बन्धुओं में बाँटकर खाना; और ४= अपने पराक्रम से प्राप्त पदार्थों का उपभोग करना।

गूढं च मैथुनं धार्ष्ट्यं काले काले च संग्रहम्।
अप्रमत्तमविश्वासं पंच शिक्षेच्च वायसात्।।१८।।

कौए से ये पांच शिक्षाएँ ग्रहण करनी चाहिएँ- १=स्त्री प्रसंग गुप्त रूप से करना, २=दुःसाहसी होना, खतरे उठाने से न डरना; ३=उपयोग से बचे हुए पदार्थों को भविष्य के लिए संग्रह करना; ४=सदा सावधान रहना और ५=किसी पर सहज ही विश्वास न करना।

बह्वाशी स्वल्पसंतुष्टः सुनिद्रो लघुचेतनः।
स्वामिभक्तश्च शूरश्च षडेते श्वानतो गुणाः।।१९।।

कुत्ते से ये सात गुण ग्रहण करने चाहिएँ- १=पर्याप्त खाना; २=पर न मिले तो थोड़े में ही संतुष्ट रह लेना; ३=अच्छी नींद लेना; ४=पर आहट होने पर तुरन्त जाग जाना; ५=स्वामीभक्ति; और ६=शूरता।

अमृत वचनावली

निरहंकाररुपेण यः समर्पितचेतसा।
साफल्यं परमाप्नोति दिव्यसर्गपरायणः।।१३।।

जीवन में दिव्यता और सफलता उसी को मिल सकती है जो समर्पित भाव से अपने चित्त की मैं को छोड़कर किसी सृजन में लगा देते हैं। मैं से ऊपर उठ जाना ही सबसे बड़ी कला है।

दहेदग्निर्हरेन्मृत्युर्न तज्जीवनमुच्यते।
न ये मृत्युभयोद्विग्ना अमृतास्ते मृता अपि।।१४।।

अग्नि जिसे जला दे और मृत्यु मिटा दे, वह जीवन नहीं है। जो मृत्यु से भयभीत नहीं हैं, उन्हें मृत्यु भी नहीं मार सकती।

मायेयं ननु च्छायेव प्रकाशो ज्ञानमेव च।
विनश्येद्रविणाच्छाया माया ज्ञानेन नश्यति।।१५।।

माया छाया है और ज्ञान प्रकाश है। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से छाया खत्म हो जाती है, उसी प्रकार ज्ञान के प्रकाश से माया अपने आप ही पीछे हट जाती है।

ज्ञानशतकम्

❑डॉ० रामभक्त लांगायन आई ए एस (से० नि०)

सुकर्कशं काष्ठमलं विभेत्तुं
यथा द्विरेफो न च पुष्पपत्रिकाम्।
तथा समर्थोऽपि नरः सुलिप्यते
मोहादिदोषैर्न च बुध्यतेऽथ।।१६।।

भंवरा सख्त से सख्त लकड़ी में भी सुराख कर सकता है; लेकिन फूल की पंखुड़ी को छेद नहीं सकता, क्योंकि वह उसमें लिप्त हो जाता है। इसी तरह जो इन्सान बड़े-से-बड़ा काम कर सकता है वह इन्सान लालसा, मोह, काम, क्रोध के जाल में फँसकर अपना रास्ता भूल जाता है।

रजो धूमादिकं यत्र स्थित तत्र प्रदुष्यति।
कामक्रोधप्रमादास्तु सर्वलोकस्य नाशकाः।।१७।।

धूल, धुआँ और गैस आदि तो एक विशेष स्थान को प्रदूषित करते हैं; परन्तु काम, क्रोध, मोह और जीवन के प्रति लापरवाही सारे समाज को दूषित करते हैं।

thearyasamaj.org

समय का सदुपयोग

❒ डॉक्टर महेशचन्द्र शर्मा (साहिबाबाद)
डॉक्टर (श्रीमती) हेमवती शर्मा

मानव-जीवन क्षण भंगुर है, इसीलिए जीवन के हर क्षण को मूल्यवान समझकर हर व्यक्ति को स्वयं को किसी-न-किसी जीवनोपयोगी काम में व्यस्त रखना चाहिए। मानव-जीवन की सफलता का रहस्य समय के सदुपयोग में निहित है। जो व्यक्ति अपने अमूल्य समय का लाभ नहीं उठाते-वे पश्चाताप करते रहते हैं। उनके बारे में किसी कवि का यह मत चरितार्थ होता है-

अब पछिताए क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत।

स्वामी रामतीर्थ का यह मत सदैव प्रांसगिक रहेगा- 'सफलता का पहला सिद्धान्त है- अनवरत कर्म।'

हर क्षण मानव को परमात्मा के द्वारा दी गई सबसे बड़ी पूंजी है। यदि हमने एक-एक क्षण की पूंजी व्यर्थ में गँवा दी तो जीवन चौपट हो जाएगा। समय का सदुपयोग करना वस्तुतः मानव-धर्म है। स्वामी विवेकानन्द का मत है कि- 'मानव-समाज से धर्म को निकाल दो, फिर शेष क्या बचेगा? पशुओं से भरे जंगल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।' गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में यह सही लिखा है कि-

'का बरषा जब कृषि सुखाने।
समय चूकि पुनि का पछिताने।।'

संत कबीर का मत है कि-

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होईगी, बहुरि करेगा कब्ब।।'

हमें समय का मूल्य समझना चाहिए तथा समयानुसार काम भी करना चाहिए। जो व्यक्ति समय की पाबन्दी को समझ लेता है तथा उसे महत्त्व देता है- उसका चरित्र विशेषतः सभी के लिए 'अपरिहार्य' हो जाता है। प्रायः सभी महापुरुष समय के पाबन्द रहे हैं। इसके विपरीत समय की शिथिलता चरित्र की बहुत बड़ी दुर्बलता है। जो व्यक्ति आलस्यवश अपने समय को नष्ट कर देता है- समय उसे नष्ट कर देता है। इसी बात का ध्यान में रखते हुए हर व्यक्ति को समय का मूल्य समझना चाहिए।

समय बहुत शक्तिशाली होता है। जो व्यक्ति समय की परख कर लेता है- वह रंक से राजा हो जाता है तथा जो व्यक्ति समय की परख नहीं करता-समय की उपेक्षा करता है, वह राजा से रंक हो जाता है। इसीलिए आवश्यकता इस बात कि है कि हम समय की गति एवं स्वभाव को पहचानें। हर व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं जिन पर उसके भाग्य का बनना अथवा बिगड़ना निर्भर होता है। यदि उसने समय की पहचान कर ली और उसका सदुपयोग कर लिया तो सफलता उसके चरण चूमेगी। यदि उसने थोड़ा सा भी प्रमाद कर दिया तो बात सदैव के लिए बिगड़ जाएगी।

किसी भी व्यक्ति को कोई भी काम असमय नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति निश्चित समय पर अपना काम सम्पादित कर लेता है, उसके जीवन में नियमितता आती है। यह एक अच्छी आछत है। इसे हम 'सफलता की कुंजी' भी मानते हैं।

आलस्य एवं कर्महीनता किसी भी व्यक्ति के सबसे बड़े शत्रु हैं। यशस्वी साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द का जीवनोपयोगी वचन है कि- 'आलस्य वह रोग है, जिसका रोगी कभी नहीं संभलता'। व्यक्ति के जीवन में कर्महीनता नहीं आनी चाहिए। 'गीता' का एक 'अपरिहार्य' सन्देश है- 'अनासक्त कर्म का सन्देश'। कुछ व्यक्ति समाज में ऐसे भी होते हैं जो निष्क्रियता का परिचय देते है। खाली बैठे हुए व्यक्ति का मन बुरी बातों की ओर ही जाता है। अँगरेजी के किसी लेखक का मत है कि-

''An Empity man's mind is devils workshop.''

अर्थात् जो व्यक्ति कर्महीन होता है- उसे शैतानियाँ ही सूझती हैं। हमारी यह निश्चित मान्यता है कि पलंगतोड़ संस्कृति व्यक्ति को निकम्मा बना देती है।

समय की महत्ता को जानने वाले तथा समझने वाले जर्मनी एवं जापान के निवासियों ने एक-एक क्षण का सदुपयोग कर अपने देश को 'कुबेर' बना लिया है। डॉ० नगेन्द्र नगाइच (अप्रवासी की यात्राएं) का मत है कि- ''जापान में जीवन कभी विश्राम नहीं लेता'' भारत की जनता का बहुलांश ऐसा है जो विश्राम-ही-विश्राम करने में अपना समय बिता देता है।

विचारक डॉ० वचन देव कुमार का मत है कि-''वैयक्तिक और सामूहिक सफलता का एकमात्र रहस्य है- समय की पूजा अर्थात एक-एक पल का सदुपयोग।''

यदि हम भारत के 'प्रगतिशील एवं राष्ट्रवादी नागरिक' बनना चाहते हैं तो हमें अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए। यदि हम अपने समय का दुरुपयोग करेंगे तो हम निश्चय ही 'कंगाल' बन जाएँगे।

thearyasamaj.org

भीष्म पितामह का उपदेश

❑ईश्वर दयाल माथुर,
१५७, संतोष नगर, न्यू सांगानेर रोड, जयपुर-३०२०१९

सम्राट् युधिष्ठिर की राजधर्म जिज्ञासा

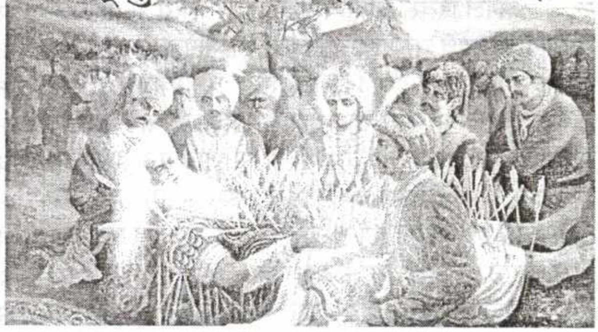

महाभारत युद्ध में स्वजनों एवं अनेक निर्दोषों का वीरगति को प्राप्त हो जाना ही युधिष्ठिर की अन्तर्वेदना के मूल कारण थे। विजेता होने पर भी वे सिंहासन पर विराजमान होने को टाल रहे थे। चारों भाईयों एवं द्रौपदी के सारयुक्त परामर्श को भी वे गले नहीं उतार पा रहे थे। सब कुछ त्यागकर प्रायश्चित स्वरूप वे वनगमन को उद्यत थे।

महर्षि वेदव्यास ने व्यवस्था दी कि आश्रम धर्म का पालन करते हुए गृहस्थाश्रम की मर्यादानुसार धर्म, अर्थ और काम का उपयोग करो। इसके अनन्तर ही वन-गमन उचित है। वेदव्यास जी के वचनों का सार इस प्रकार रहा-

'सबसे पहले तुम सर्वमेध और अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न करो। इनकी परिणति में आत्मानुशासन तथा कर्त्तव्य का बोध होगा। अकारण उद्वेग से शोक, शोक से दुःख और दुःख से क्रमिक दुःख एवं भय की ही वृद्धि होती है।'

अति विनीत स्वर में युधिष्ठिर ने अन्तर्प्रश्न किया- 'मुनि-श्रेष्ठ, आपका कथन मननीय है, परन्तु मेरे मन-मस्तिष्क पर परिजनों का घातक, राज्य-पिपासु एवं मर्यादा विहीनता के आरोप का आवरण चढ़ा हुआ है, उसे हटा नहीं पा रहा हूँ। मेरी मति में ये सब अक्षम्य-अपराध हैं, अतः प्रायश्चित यही है कि आमरण-अनशन से प्राण त्याग दूँ।'

युधिष्ठिर के कातर वचनों को महर्षि वेदव्यास भी नहीं सह पा रहे थे, अतः उन्होंने कुछ कठोर भाषा का भी प्रयोग किया- 'नहीं युधिष्ठिर, कदापि नहीं। यह व्यर्थ का शोक है। अनेक जन्म लेकर हम संसार में आते जाते रहे हैं, माता-पिता और बन्धु-बान्धवों के संबंध स्थापित किये हैं, किन्तु वर्तमान जन्म में उनकी सार्थकता क्या रह जाती है? विधाता ने जिन कर्मों के निष्पादन के लिए यह जन्म दिया है उनका निर्वहन करो, अपने कर्मफल के स्वामी अथवा निर्णायक स्वयं न बनो।'

इतना सुनकर युधिष्ठिर उद्वेग को त्यागते से प्रतीत

हे कुन्ती नन्दन! सुरक्षित राष्ट्र निर्माण के लिए राजा सात अंगों का दृढ़ता एवं कुशलता से संचालन करे- इसके अतिरिक्त राजा को छह गुण, तीन वर्ग एवं तीन परमवर्गों का भी ज्ञाता होना चाहिए।

हुए और मार्ग दर्शन चाहा- 'धर्मानुसार आचरण और दूसरी ओर शासक-धर्म का निर्वहन; ये मुझे विरोधाभासी दिखते हैं। अतः हे महामुने! मैं वर्णाश्रम धर्म तथा राजधर्म-निर्वहन पर मार्ग-दर्शन प्राप्त करने का अभिलाषी हूँ।'

'हे धर्मराज, तुम्हारी ऐसी ही जिज्ञासा है तो मेरा आग्रह है कि भीष्म पितामह के पास पहुँचो। वे तुम्हारी समस्त शंकाओं का समाधान करने में सक्षम हैं।' ऐसा परामर्श व्यास जी ने युधिष्ठिर को दिया। अतः चितवृत्ति पर नियंत्रण रखते हुए उन्होंने हस्तिनापुर जाने का और राज्यारोहण का निश्चय किया। इस निश्चय से सभी भ्रातृवृन्द एवं हस्तिनापुर वासी आनंदित हुए।

द्रौपदी सहित सिंहासनारूढ़ होते ही राजपुरोहित धौम्य ने विधि-पूर्वक राज्याभिषेक सम्पन्न कराया। सिंहासन से महाराज युधिष्ठिर ने सर्वप्रथम घोषणा भीमसेन को युवराज बनाने की करी। तत्पश्चात् विद्वत्-श्रेष्ठ विदुर को राजकार्य विषयक गुप्त मंत्रणाओं का प्रभारी नियुक्त किया। राजकोष, आय-व्यय संबंधी कार्यार्थ संजय को, सेना संबंधी समस्त प्रणालियों के लिए नकुल और परराष्ट्र मंत्री अर्थात् इतर देश व राज्य संबंधों के लिए अर्जुन को नियुक्त किया। धार्मिक कार्यों के लिए महर्षि धौम्य पूर्ववत् रहे एवं शासकीय कार्य निर्वहन में सहदेव को अमात्य बनाया। शासन संचालन में

thearyasamaj.org
अन्य यथायोग्य नियुक्तियाँ महाराज युधिष्ठिर ने कर दीं।

अगले दिवस श्रीकृष्ण, कृपाचार्य, चारों भ्राता और सात्यकि के साथ महाराज युधिष्ठिर भीष्मपितामह के पास रणक्षेत्र में पहुँचे। इस दिन पितामह ने सर्वोत्तम तीर्थ, सार्वजनिक जीवन और वर्णाश्रम धर्म पर प्रभावी वाणी में युधिष्ठिर को उपदेश किया। संध्या हो जाने पर युधिष्ठिर राजधानी लौटे और अगले दिन फिर भीष्म पितामह के पास उपस्थित हुए। पितामह की चरण वन्दना के पश्चात् महाराज युधिष्ठिर ने अपनी जिज्ञासा प्रकट की-

'पितामह! आचार्य तथा गुरुजनों का मत है कि नरेश का पद उत्तम है, किन्तु मैं इसे धर्म पालन के विपरीत मानता हूँ। ऊहापोह की इस स्थिति से उबरने के लिए कृपया मुझे राजधर्म-निर्वहन का मार्गदर्शन करें।'

'तो वत्स सुनो', महामना भीष्म ने संयत वाणी में कथन आरंभ किया।-

'सर्वप्रथम राजा के वैयक्तिक गुणों से तुम्हें अवगत कराता हूँ। राजा को सदैव पुरुषार्थ-शील होना चाहिए। प्रारब्ध से भी राजपद मिलता है किन्तु बिना पुरुषार्थ के प्रारब्ध, शासन संचालन में निर्णायक भूमिका कदापि नहीं निभा सकता। राजा का अगला गुण सत्यपरायणता है जिसके आधार पर ही प्रजा का विश्वास प्राप्त होता है।'

'हे कुरुश्रेष्ठ! राजा को धर्मपरायण, दानी, गुणवान, गुणपारखी, सुशील, जितेन्द्रिय तथा कोमल स्वभाव वाला होना चाहिए। सदैव कोमल ही नहीं बने रहना; अवसरतः कठोरता का भी आश्रय लेना चाहिए। अन्यथा कोमलता का दुरुपयोग हो सकता है अर्थात् चाटुकारिता पनप सकती है।'

'हे पृथा-पुत्र! राजा को दूरदर्शी होना चाहिए। यह दूरदर्शिता धैर्यपूर्ण व योगशास्त्र के सूत्रादेश- प्रत्यक्ष, आगम, अनुमान और उपमान पर टिकी होनी चाहिए। दोषी और निर्दोष में परिसीमन करना अर्थात् निर्दोष दण्ड का भागी न बने; ऐसी न्याय प्रक्रिया होनी चाहिए। दंभ के वशीभूत कुमार्गी गुरु और ब्राह्मण भी दण्डनीय है।'

'हे पाण्डव श्रेष्ठ! अब मैं उन सब गुणों एवं तत्त्वों का वर्णन करता हूँ जो कुशल एवं यशस्वी सम्राट् में होने चाहिएँ।' अपने कथन को पितामह ने यूँ आगे बढ़ाया-

'प्रथमतः राजा को इन्द्रियजीत (जितेन्द्रिय) होना चाहिए। स्वानुशासी शासक ही शत्रु के प्रति सन्नद्ध रहकर उसका दमन कर सकता है। सुन्दर-सुगढ़ नगर रचना के साथ ही रक्षात्मक बिंदुओं पर भी ध्यान देना चाहिए। दुर्भेद्य-दुर्ग एवं प्रतिरक्षात्मक छावनियों का गठन कर प्रजा को सुरक्षा के प्रति आश्वस्त रखना चाहिए। विश्वसनीय एवं कुशाग्र बुद्धि वालों की नियुक्तियाँ गुप्तचर सेवाओं में करें।'

'हे कुन्ती नन्दन! सुरक्षित राष्ट्र निर्माण के लिए राजा सात अंगों का दृढ़ता एवं कुशलता से संचालन करें- राजा का स्वयं का शरीर (अंगरक्षकों की नियुक्ति से), मंत्रीमण्डल, कोष, सेना, मित्र, राष्ट्र तथा नगर। इसके अतिरिक्त राजा को छह गुण, तीन वर्ग एवं तीन परमवर्गों का भी ज्ञाता होना चाहिए। शत्रु से संधि, शत्रु पर आक्रमण, शत्रु से बैर, शत्रु को आर्तंकित (भयभीत रखने) करने के लिए शक्ति प्रदर्शन, भेदनीति से शत्रुवर्ग में फूट डलवाना तथा दुर्ग और सबल राजा का आश्रय लेना, इन छह गुणों के बाद तीन वर्ग हैं- क्षय, स्थान और वृद्धि। सर्वोपरि अर्थात् परम वर्ग हैं- धर्म, अर्थ एवं काम।'

'चारों वर्णों को अपने-अपने धर्म (कर्त्तव्य) निर्वहन में प्रवृत्त रखने के लिए उत्तम व दृढ़ दण्ड व्यवस्था-विधान होना चाहिए। अर्थात् जहाँ दण्ड का उद्देश्यपूर्ण उपयोग होता है; वहीं धर्म आश्रय लेता है।'

अन्त में पितामह ने राजा को यश एवं लोकप्रियता दिलवाने वाले निदेशक-तत्त्व वर्णित किए; संख्यात्मक रूप में ये छत्तीस हैं-

(१) स्वधर्म (कर्त्तव्य) का पालन, (२) सबसे प्रीतिपूर्वक व्यवहार, (३) क्रूरता रहित धन-संग्रह, (४) मर्यादापूर्ण कोष उपभोग, (५) प्रिय भाषण, (६) दंभरहित शौर्य, (७) सुपात्र को दान, (८) अदम्य साहस, (९) दुष्टों का दमन, (१०) बन्धुबान्धवों से सहिष्णुता, (११) राजभक्त गुप्तचर व्यवस्था, (१२) अहिंसा, (१३) दुष्टों के प्रति सजगता, (१४) अपनी प्रशंसा स्वयं न करना, (१५) उत्तम पुरुषों की सम्पत्ति रक्षा, (१६) दुर्बुद्धियों की सहायता न लेना, (१७) विश्वस्त प्रमाण के अभाव में दण्ड न देना, (१८) गुप्तमंत्रणा (रहस्य) प्रकट न करना, (१९) लोभी को पुरस्कृत न करना, (२०) निर्दयी का विश्वास न करना, (२१) पत्नी की रक्षा करना, (२२) घृणा (उपेक्षा) रहित व्यवहार, (२३) अधिक भोग विलास से बचना, (२४) अशुद्ध एवं स्वास्थ्य नाशक भोजन न करना, (२५) सम्मान्य का सत्कार (२६) गुरुजनों के प्रति निष्कपट सेवाभाव (२७) विद्वानों का सम्मान, (२८) सत्यनिष्ठा से धन संग्रह, (२९) निर्वैर व्यवहार, (३०) कार्यकुशलता, (३१) छल-छद्म न करना, (३२) उपकार का बखान न करना, (३३) अकारण बल प्रयोग न करना, (३४) शत्रु हनन पर शोक नहीं, (३५) अकारण क्रोध न करना तथा (३६) अपकारी (क्रूर) से कठोरता।

'उपर्युक्त सभी तत्त्वों का समावेश एवं पालन ही कुशल राजधर्म है।' इतना कहकर पितामह ने वाणी को विराम दिया। उपकृत भाव से सम्राट राजधानी लौटे एवं राजसूय यज्ञ की तैयारी करने लगे।

thearyasamaj.org

युवा चरित्र को बचायें, भारत को विश्वगुरू बनायें

❑आचार्य आर्य नरेश, वैदिक गवेषक, डोहर, हिमाचल प्रदेश

युवाओं के मुख पर प्राचीन विद्यार्थियों की तरह न तो तेज दिखाई देता है न ही मन में उत्साह एवं पुरुषार्थ करने की इच्छा। इस मुर्झाये हुए तेजोहीन उदास जीवन का एक मुख्य कारण है 'चरित्र का पतन'। जिसका परिणाम् मिलता है रोगों, बहु-विवादों एवं आत्महत्याओं के रूप में!

जब आर्यावर्त्त (भारत) के विद्यार्थियों को माता-पिता तथा अध्यापकों से चरित्र रक्षा हेतु ब्रह्मचर्य की शिक्षा द्वारा प्रजनन व अन्य इन्द्रियों को सदा संयम से पवित्र रखने की शिक्षा मिलती थी, तब भारत ज्ञान, बल व शासन में विश्व गुरु था, सात्त्विक व संयमी व्यवहार के कारण स्वस्थ, सुन्दर और शांत था। जीवन उसी का पूज्य व प्रकाशित होता था जो धन को व्यर्थ प्रदर्शन के कार्यों में खर्च न करता था तथा राष्ट्र की सभी माता, बहनों, बहु व पुत्रियों को अपनी माता के तुल्य आदर देता था। भले ही वह नारी हो या नर-- लज्जा उसका गहना व यश उसका जीवन होता था। लज्जा रहित नर-नारी को कोई मान न मिलता था। लोक में यश को पाना समाज के सर्वोच्च स्थान को ही पाना था जिस का सर्वत्र सत्कार व मान होता था।

वैदिक शिक्षाओं के कारण व्यक्ति सृष्टिकर्ता ईश्वर को कण-कण में जान व वेद-वाणी को मान कर जीवन को सदा भौण्डे असभ्य प्रदर्शन, कामुक, उच्छृंखल व्यवहार और अभिमानयुक्त असत्य भाषण से कोसों दूर रहता था। इसी कारण आर्यावर्त्त के निवासी न तो अनुचित व्यवहार की नकल करते थे एवं न ही उसके लिए धन एवं चरित्र को नष्ट करते थे। पूर्ण ब्रह्मचर्य के पश्चात् विवाह से पूर्व न शारीरिक संबंध थे एवं न ही कामवासना व शर्म हीनता को बढ़ाने वाले अर्धनग्न लिबास।

अत्यंत खेद का विषय है कि आज के युवा की वैदिक संयम शिक्षा के अभाव में जहाँ शारीरिक शक्ति, सुन्दरता तथा इज्जत लुट रही है, वहीं शांति तथा सम्पत्ति भी विनष्ट हो रही है। युवाओं के मुख पर प्राचीन विद्यार्थियों की तरह न तो तेज दिखाई देता है न ही उत्साह एवं पुरुषार्थ करने की इच्छा। इस मुर्झाये हुए तेजोहीन उदास जीवन का एक मुख्य कारण है 'चरित्र का पतन'। जिसका परिणाम मिलता है रोगों, बहु-विवादों एवं आत्महत्याओं के रूप में। माता-पिता तथा अध्यापकों द्वारा 'यौवन शक्ति तथा चरित्र की रक्षा ही जीवन की रक्षा है' का उपदेश न मिलने अथवा उसके अनुसार आचरण न करने से आज का युवा अपने लक्ष्य से भटक गया है। जो उस का बल-धन व समय, शारीरिक, राष्ट्रीय व बौद्धिक उन्नति तथा आत्मिक आनन्द की प्राप्ति हेतु लगना चाहिए था उसे वह पाश्चात्य कुव्यवहार की अंधी नकल से परस्पर अनैतिक सम्बन्धों को जोड़ने, उन्हें बढ़ाने एवं श्रृंगार और असत्यभाषण में विनष्ट कर रहा है। झूठे व्यवहारों का यह धर्म विहीन व्यवहार या तो उन्हें सदा के लिए (डिप्रेशन) जैसे मानसिक विकारों से ग्रस्त कर देता है या भयंकर शारीरिक रोगों का शिकार बना देता है। यही कारण है कि आज के १६-२७ वर्ष से ऊपर के युवाओं में हृदय रोग, शूगर, सिर दर्द, एसिडिटी, पत्थरी, अनिद्रा और उग्रता की वृद्धि हो रही है।

पथभ्रष्ट युवा पथ-प्रदर्शन के अभाव में और पूर्वजों की शिक्षा की अवमानना से यह नहीं जान पा रहा कि जीवन के स्थायी सुख, शांति तथा ऐश्वर्य का आधार इन लोगों का अंधानुकरण नहीं है, जिनके कारण अमेरिका, इंग्लैण्ड एवं इटली आदि देश वासना अपराध (sex scandal) की मण्डियाँ बन कर असंयत वासना से बर्बाद होने के कगार पर हैं। इटली में सौ में से ४५-५० विवाहित आदमी-औरतों के दूसरों से अनैतिक सम्बन्ध हैं। अमेरिका में लाखों करोड़ों विवाहित जोड़े अकेले ही रहने पर मजबूर हैं। किसी की पत्नी अलग है तो किसी का पति। ऐसी स्थिति में बच्चों की तो और भी दुर्दशा होती है। यही कारण है कि संसार में सबसे अधिक धनाढ्य माने जाने वाले अमेरिका की सबसे बड़ी समस्या उसके अपराधी मानसिकता के युवा हैं, जिनकी न तो पढ़ने में रुचि है एवं न ही कोई काम करने में। इसका मूल कारण है मन चंचलता, संयम की शिक्षा का अभाव, उन्मुक्त कामवासना। वहाँ विवाहित जीवन का कोई भरोसा नहीं, न जाने कब तलाक हो जाए! इसी कारण से तो गत दिनों ओबामा यहाँ रोता-रोता आया और उन्हें

thearyasamaj.org

जिन्दा रखने हेतु अरबों का व्यापार सौदा ले गया।

वस्तुतः स्थायी शांति युक्त जीवन का आधार है- जीवनी शक्ति ब्रह्मचर्य की रक्षा, शरीर की निरोगता तथा विद्या की पूर्णता के पश्चात् सोच विचार कर गुण कर्म स्वभाव के अनुसार जीवन साथी का चुनाव; जिससे दोनों गृहस्थ का पूर्ण सुख भोगते हुए बलवान, धार्मिक, अनुशासित संतान को जन्म देकर राष्ट्र की सेवा द्वारा श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्री राणाप्रताप, श्री अर्जुन सिंह व श्री भगवती चरण वोहरा के समान सदा के लिए पूजे जाएँ। युवा समझें कि भूमि माता का ऋण चुकाना उनका भी धर्म नहीं, परम धर्म है।

गन्दे, अश्लील, कामुक, भड़काऊ सीरियल, सीडी व पत्रिकाओं एवं चलचित्रों को देख कर संस्कारविहीन युवा वैसे ही चमकने की कोशिश में सदा के लिए अंधकार में डूब जाते हैं। आज के स्कूलों एवं कॉलेजों में रेस प्रारंभ होती है कि किस लड़के की कितनी गर्लफ्रैण्ड हैं एवं किस लड़की के कितने ब्वायफ्रैण्ड। जिसके ज्यादा वही बड़े स्टेटस वाला। जिसके वस्त्र जितने अधिक तंग, छोटे एवं शरीर की नग्नता दिखाने वाले- वही सब से अधिक सभ्य व ऊँचा। जो जितना अधिक कैण्टीनों, क्लबों, पार्कों, मॉलों एवं सिनेमा-स्थलों पर धन बर्बाद कर सके, वही पूज्य! प्रतिदिन जीवन की इस झूठी दौड़ में न जाने कितने लड़के-लड़कियाँ बर्बाद होकर मृत्यु को प्राप्त होते हैं। परस्पर वासना मोहजाल में जकड़ने के कारण एक दूसरे से दूर न जाने की इच्छा से अनेक लड़के-लड़कियाँ जहाँ अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने वाली उच्च शिक्षा, सर्च-गवेषणा प्रोजेक्ट व अच्छी नौकरियों से हाथ धो बैठते हैं, वहीं स्थायी गृहस्थ की सुख-शांति से भी जीवन भर वंचित रहते हैं।

साधारण युवा लाईमलाईट में चमकने हेतु चोरी, डकैती, वैश्यावृत्ति, स्मगलिंग एवं अन्य लोगों को उठाकर फिरौती से धन एकत्रित करके बर्बाद होते है, एवं धनाढ्य लड़कियाँ तथा लड़के अधिक सम्बन्धों से वाह-वाह लूटने के चक्कर में सामूहिक बलात्कार या कत्लेआम का शिकार होते हैं। अनेक लड़कियाँ अनेक मित्रों से अथवा एक मित्र से अनैतिक संबंध होने के कारण अश्लील वीडियो व सामूहिक बलात्कार की शिकार हो चुकी हैं। कितनी ही विवाहित लड़कियाँ वा लड़के अन्यों के साथ अनैतिक सम्बन्धों के पता चलने पर जीवन भर के लिए उसके दु:ख के आंसू पीते हैं एवं कत्ल कर दिए जाते हैं। यदि माता-पिता बाल्यकाल से उन्हें भाई-बहन की तरह देखने की शिक्षा दें तो बच जाएँ।

युवाओं को पथभ्रष्ट, वासना युक्त करने तथा नष्ट करने में सबसे बड़ा हाथ रहता है झूठ बोलने का। युवा अपना सारा पाप अपने माता-पिता तथा आचार्य से झूठ पर झूठ बोलकर दबाते रहते हैं एवं इसमें सबसे बड़ा सहयोगी बनता है उनके हाथ में विद्यार्थी काल में दिया गया चलभाष- मोबाईल फोन! जिससे अधिकतर माता-पिता को यह पता ही नहीं चलता कि किस समय व कहाँ व कितनी बार उन्होंने पाप करने की योजना बनाई व लम्बी-लम्बी काल से समय निश्चित करके पतित हुए। अतः युवाओं को चरित्र रक्षा हेतु ब्रह्मचर्य का निरन्तर उपदेश करें एवं झूठ बोलने व फोन रखने से बचाएँ।

सबसे बड़ी विजय

❑ दयाशंकर गोयल
१५५४ डी, सुदामा नगर, इंदौर-४५२००९

सबसे बड़ी विजय है, जय अपने स्वभाव पर पाना।
अपना जीवन स्वात्म नियंत्रित रखते हुए चलाना।।

अभी हमारा जीवन अन्यों की टिप्पणी पे चलता।
तद्‌वत मनोदशा बदलती, तद्‌वत्‌ 'मूड' बदलता।।

इसका सहज अर्थ है, मन है नहीं नियंत्रित अपने।
वह इन्द्रिन पे कस लगाम, पूरे करता निज सपने।।

वह अतृत्त, इन्द्रिन संग अपनी रहता प्यास बुझाता।
और हमें त्री तापों के गड्डों में गहन गिराता।।

अपना, जीवन रथ संचालक मन को नहीं बनाओ।
स्वाभिभक्त सेवक विवेक को रथ-लगाम पकड़ाओ।।

जब भी जागे, तभी सवेरा समझो, अब मत सोओ।
जीवन-रथ, मन-इन्द्रिन के वश में कर दुख मत बोओ।।

सुखद-दुखद सम-विषम सरल अरू वक्राकृति जग-मग के।
द्वन्द्वों से, विवेक ही करता रहा पार, जब जग के।।

वह, सतर्क विज्ञान-ज्ञान की कस नकेल इन्द्रिन पर।
गड्डों से बच रोधों पे चढ़, पहुँचाता मंजिल पर।।

मन, इन्द्रिन का साथ न मिलने से अशक्त पड़ जाता।
अनुसर कर विवेक का, रथि का सद्‌सेवक बन जाता।।

अस्तु आत्मन! ऋषि निर्देशित ये शुचि युक्ति जमाओ।
सतत प्रतिक्षारत मंजिल से मिल, अमितानन्द पाओ।।

thearyasamaj.org

प्रतिज्ञा

❑सारस्वत मोहन 'मनीषी'-

भारत की पावन माटी में, शुभ अरावली की घाटी में।
बन करके बिजली टूट पड़ा वह अकबर की चौपाटी में।।
वीरों की लेकर सभी शक्ति, ऋषि-मुनियों की ले पूत भक्ति।
इक स्वतन्त्रता का फूल खिला उस पराधीन परिपाटी में।

भारत को नई जवानी दी, दरिया को तेज रवानी दी।
बलिदानों की दीपावलियाँ, लेखक को नई कहानी दी।।
सारा धरती अंबर डोला, कण-कण हर-हर बम-बम बोला।
वृद्धों में फिर से जोश जगा, रवि को निहार तम दूर भगा।

है साथ नहीं भैया तो क्या, डगमग डोले नैया तो क्या।
जब तक शोणित की बूँद एक, छोड़ूँ स्वतन्त्रता की न टेक।
सोने-चाँदी की थाली क्या, हीरे पन्ने की प्याली क्या।
जब तक ना पूर्ण प्रतिज्ञा हो, सुविधा की पूर्ण अवज्ञा हो।
तब तक धरती पर सोऊँगा, स्वातन्त्र्य बीज में बोऊँगा।
पत्तों पर भोजन कर लूँगा, रूखी-सूखी से भर लूँगा।।
आँखों में आंसू की क्रीड़ा, मुस्काती आनन पर पीड़ा।
पौरुष दे छोड़ परुषता को तब आती है मुख पर व्रीडा।।

ईश्वर ने कठिन परीक्षा ली, निर्दय ने नहीं प्रतीक्षा की।
भूखे बच्चे रोने लगते, तब उर में गोले से दगते।
आँखों में आँसू आ बोले, बन जाओ साहस के शोले।।
इक दिवस मण्डली बैठी थी, भूखी आंतें सब ऐंठी थीं।।
थीं कठिन परीक्षा की घड़ियाँ, ले आई पीड़ा की लड़ियाँ।।
सेकी जब घासों की रोटी, नाचा था मन, फड़की बोटी,
बच्चें किलके इस आशा से हमको रोटी मिल जायेगी।
पर्वत पर चढ़ने वाला ज्यों, सोचे चोटी मिल जायेगी।।
नन्हे हाथों में आई थी, विधि को यह भी न सुहाई थी।।
उसको षट् व्यंजन कर पुलाव, झट से झपटा जंगली बिलाव।

thearyasamaj.org

भूखे बालक चिल्लाते थे, आँखों में आंसू आते थे।
माता की ममता रोई थी, राणा का पौरुष डोला था।
अब भी तुम क्या सह पाओगे, कानों में कोई बोला था।।

ऐसे जीने से तो राणा, मर जाना ही अब अच्छा है।
धिक्कार पिता पर है ऐसे मरता भूखा जो बच्चा है।।
भूखे बच्चों की भूखों की, बिन पानी मरते रुखों की।
आँगन के खेल खिलौनों की, नयनों के स्वप्न सलौनों की।
मस्तक की उजड़ी रोली की, उस तार-तार की चोली की।
ऋषि-मुनियों की परिपाटी की, भारत की पावन माटी की।

सौंगध तुम्हें मेरे प्रताप, अब तुमको कुछ करना होगा।
अरिमुण्ड मांगती काली माँ, उसका खप्पर भरना होगा।।
चाहो यदि जीवित रहना, तो हंसते-हंसते मरना होगा।
पाना चाहो यदि कूल, अरे! रक्तिम सागर तरना होगा।।

जब सुनी चुनौती माता की, तन रोम-रोम ललकार उठा।
जैसे सोये अहि को छेड़ा, वह क्रोधित हो फुफकार उठा।
असि नागिन सी लपलपा उठी, सारी धरती कंपकंपा उठी।
आंखों में खून उतर आया, सर्दी में जून उतर आया।।

चेतक पर चढ़ केहरि गरजा, रक्तिम सावन से तन सरसा।।
तलवारों से वह अगन जली, ऊपर से पागल पवन चली।
धरती की पावन पुस्तक पर, अरि मुण्डों के नव शब्द बना।
लेखनी बना करके असि की, इतिहास लिख दिया रक्त सना।।
धीरे-धीरे करके सारे दुर्गों पर झण्ड़े फहराये।
अफसोस यही चितौड़ देखता, रहा पलक बिन झपकाये।।

वह देश भक्ति की मस्ती में, बसता स्वतन्त्रता बस्ती में।
मतवाला केहरि झूम उठा, ज्यों शलभ शिखा को चूम उठा।
वह टूट गया वह झुका नहीं, मंजिल पाये बिन रुका नहीं।
वह भारत माँ की शान बना, औ मानव से भगवान बना।।

जब तक अम्बर में तारे हैं, सूरज ओ चंदा चमकेगा।
तब तक तेरा राणा प्रताप यश सूर्य धरा पर दमकेगा।।

thearyasamaj.org

स्वतंत्रता संग्राम के अनजाने योद्धा

एम० पी० तिरुमल आचार्य : अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे : योगेशचन्द्र चटर्जी

❒राजेशार्य आट्टा, 1166, कच्चा किला, साढौरा, यमुनानगर-१३३२०४

क्रांति-यज्ञ में आहुति देने वाले कुछ वीर तो इतने प्रसिद्ध हो गये कि उनका इतिहास दबाया नहीं जा सका, पर उन्हीं के कुछ साथी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाकर भी समुचित सम्मान नहीं पा सके। प्रस्तुत लेख कुछ ऐसे ही वीरों को समर्पित है- लेखक

प्रिय पाठकवृन्द! अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े गये स्वातंत्र्य समर में आहुत होने वाले सभी वीर-वीरांगनाओं का इतिहास प्राप्त होना अब असम्भव सा लग रहा है, क्योंकि स्वतंत्रता के पश्चात् देश के कर्णधारों ने इस विषय में घोर उदासीनता दिखाई। पता नहीं वे कौन सी विवशताएँ रही होंगी कि स्वतंत्रता के बाद भी हमारे राष्ट्र-नायकों को बहुत से कानून भी वही रखने पड़े, जो अंग्रेजों के बनाये हुए थे अर्थात् जो हमारे देश को पराधीन रखने के लिए बनाये गये थे और इतिहास भी उन्हीं का लिखा गया, जिन्हें अंग्रेज चाहते थे। आजादी के बाद होना तो यह चाहिए था कि लगभग एक हजार वर्ष की गुलामी के सभी चिह्न मिटाए जाते जबकि हम धर्मनिरपेक्षता की आड़ लेकर मंदिरों पर बनी मस्जिदों (हिन्दुत्व पर इस्लाम की विजय की प्रतीक) को भी नहीं हटा पाए। सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण से इन्हें साम्प्रदायिक होने का डर लगा इसीलिए प्रधानमंत्री जी राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को भी वहाँ जाने से रोकते रहे।

कुछ जीवित बचे क्रांतिकारियों के व शहीद क्रांतिकारियों के प्रति श्रद्धा रखने वाले देशभक्तों के व्यक्तिगत प्रयास के परिणामस्वरूप ही कुछ क्रांतिकारियों से हमारा परिचय हो सका अन्यथा अन्तर्राष्ट्रवाद की जय बोलने वालों ने तो ऐसा षड्यन्त्र रचा था कि आने वाली पीढ़ी यह भूल ही जाती कि भारत पर कभी मुसलमानों या अंग्रेजों ने अत्याचार भी किये थे। स्वा० विद्यानन्द विदेह ने लिखा है-

आज जब नई पीढ़ी नेताजी सुभाष व भगतसिंह के योगदान को जानना चाहती है तो उसे उत्तर मिलता है कि भारत सरकार के गृह मंत्रालय में उनके योगदान का कोई रिकार्ड नहीं है। फिर भावी पीढ़ी राष्ट्र के लिए बलिदान की प्रेरणा कहाँ से लेगी?

'अंग्रेज गर्वनर जनरल और गवर्नरों के आदेशानुसार कांग्रेस, कांग्रेस-कार्यकर्ताओं के विरोध में जाने वाली सभी फाईलें जला दी गईं और विशेष रिकार्ड ब्रिटेन ले जाया गया। जुलाई (१९४७ ई०) के प्रथम सप्ताह से १५ दिन तक लाखों मन रिकार्ड और इतिहास जला दिया गया। अकेले आबू पर्वत पर मेरे देखते-देखते मुगल राज्य काल तक के, बल्कि उससे भी पूर्व के असंख्य अमूल्य रिकार्ड जला दिये गये, जिनके दहन के साथ न जाने भारत का कितना अमूल्य इतिहास भस्म हो गया। उसी दहन कार्य के ढेर में अनायास एक गुप्त किताब मेरे हाथ लगी थी-Dayanand and Arya Samaj (दयानन्द और आर्यसमाज) जिसके अवलोकन से दयानन्द की वास्तविक शक्ति और उसके आर्यसमाज आंदोलन का सही स्वरूप स्वयं अंग्रेज सरकार की कलम से मुझे प्रथम बार मालूम हुआ था। इन रिकार्डों को जलवाने का एकमात्र उद्देश्य यह था कि जाते-जाते अंग्रेज जहाँ एक ओर भारतीय इतिहास की गौरवपूर्ण गाथाओं और अंग्रेज जाति की भारत में काली करतूतों पर सदा के लिए परदा डाल गया, वहाँ दूसरी ओर वह कांग्रेस व कांग्रेसी नेताओं के विरुद्ध कोई ऐसा रिकार्ड नहीं छोड़ जाना चाहता था, जिन्हें पढ़कर कांग्रेसी शासकों के मन में अंग्रेजों के प्रति चिढ़ या घृणा उत्पन्न होती।'

'इधर अंग्रेज यह करा रहे थे और उधर स्वयं कांग्रेसी सरकारें क्रांतिकारियों के वीरतापूर्ण रिकार्डों में दियासलाई दिखा रही थीं, इस विचार से कि यदि कभी क्रांतिकारियों का सच्चा समूचा इतिहास प्रकाश में आ गया तो कांग्रेस के प्रभाव और बनाव को धक्का पहुँचने की आशंका हो सकती थी। नेता जी और फारवर्ड ब्लाक के वीर कारनामों के लेखे और साथ ही बंग-भंग से लेकर आजाद हिन्द फौज तक के सकल क्रांतिकारियों के वीर काण्डों के काग़जात किस निर्दयता और हृदयहीनता के साथ अग्नि की लपटों

thearyasamaj.org

के सुपुर्द कर दिये गये, उसकी स्मृति मात्र से कलेजा मुंह को आता है।'

'कांग्रेस का प्रत्येक वह व्यक्ति जो एक बार भी जेल गया, पीड़ित-सूची में ले लिया गया, पर स्वतंत्रता के बाद भी जीवित रहने वाले क्रांतिकारी वीर सावरकर, वारीन्द्र घोष, भूपेन्द्रनाथ सान्याल आदि की मासिक सहायता के प्रस्ताव को प्रधानमंत्री ने जिस निष्ठुरता से ठुकराया, उसे देखकर भारत माता खूनी आँसू रोई होगी।'

(नेहरू: उत्थान और पतन)

क्या इसी का परिणाम नहीं है कि आज जब नई पीढ़ी नेताजी सुभाष व भगतसिंह के (स्वतंत्रता संग्राम में) योगदान को जानना चाहती है तो उसे उत्तर मिलता है कि भारत सरकार के गृह मंत्रालय में उनके योगदान का कोई रिकार्ड नहीं है। फिर भावी पीढ़ी राष्ट्र के लिए बलिदान की प्रेरणा कहाँ से लेगी? ऐसे में यदि घोटालों की दौड़ होती हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अण्डे, मांस, शराब, क्रिकेट, समलैंगिकता, लीव इन रिलेशन व अश्लील फिल्मों का प्रचार करना तो धर्मनिरपेक्षता (उदारवाद) है और देशभक्तों का नाम लेना साम्प्रदायिकता (संकीर्णता) है??

एक और अन्धेरगर्दी पर रोना आता है कि कुछ लोग शहीदों का सम्मान करते भी हैं तो जातिवाद व क्षेत्रवाद के संकुचित दायरे में घिर कर ही। वे उधमसिंह को सिक्खों तक सीमित रखते हैं; महाराणा प्रताप को राजपूतों तक व शिवाजी को मराठों तक ही। भगतसिंह को भी इसी तरह संकुचित दायरे में घेरने का घृणित प्रयास हो रहा है। कुछ को 'पगड़ी वाला' भगतसिंह ही पसन्द है, दूसरा नहीं। कुछ मार्क्सवादियों को चन्द्रशेखर आजाद के तन पर जनेऊ अच्छा नहीं लगता। अर्थात् हम उनके जैसा तो बने नहीं उन्हें ही अपने जैसा बनाना चाहते हैं। स्मरण रहे, आजाद पर बिस्मिल के आर्य विचारों का प्रभाव था। वास्तव में सच्चे देशभक्त वही हैं जो उन्हें स्वतंत्रता संग्राम के बलिदानी योद्धाओं के रूप में देखते व अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं। श्री रविचन्द्र गुप्ता गौतम बुद्ध नगर (उ० प्र०) व श्री गुरुदर्शन सिंह 'डिंकल' (दिल्ली) जैसे लोगों को मैं शहीद की तरह सादर नमन करता हूँ, जिन्होंने अपने खून से लगभग १५०-१५० शहीदों के चित्र बनवाए और अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित किया।

अस्तु! क्रांति-यज्ञ में आहुति देने वाले कुछ वीर तो इतने प्रसिद्ध हो गये कि उनका इतिहास दबाया नहीं जा सका, पर उन्हीं के कुछ साथी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाकर भी समुचित सम्मान नहीं पा सके। प्रस्तुत लेख कुछ ऐसे ही वीरों को समर्पित है-

एम० पी० तिरुमल आचार्य- वीर सावरकर के सम्पर्क से मदनलाल ढींगरा के अन्दर का क्रांतिकारी जाग गया और बलिदानी भावना से प्रेरित होकर उसने कर्जन वाईली को ढेर कर दिया (१ जुलाई १९०९ ई०)। क्रांतिवीरों का सीना चौड़ा हो गया, पर अंग्रेज-भक्त परेशान हो गये। स्वयं मदनलाल ढींगरा के पिता ने तार भेजकर इंग्लैण्ड के अखबारों को सूचित किया कि मैं मदनलाल को अपना पुत्र नहीं मानता। उसने मेरे नाम को कलंकित किया है। ५ जुलाई को सर आगा खां के नेतृत्व में भारतीयों ने लंदन के कैक्सटन हाल में कर्जन वाइली को श्रद्धांजलि दी और मदनलाल धींगड़ा की निन्दा का प्रस्ताव रखा। गरजती आवाज से उसका विरोध किया क्रांति-गुरु वीर सावरकर ने। सावरकर का नाम सुनते ही एक गोरे युवक ने उनके मुँह पर जोर का मुक्का मारते हुए कहा- तू है सावरकर! तो ले चख अंग्रेजी मुक्के का मजा!'

सावरकर का चश्मा टूट गया, होंठ कट गया और खून निकल आया। तभी मुक्के का उत्तर देते हुए एक भारतीय युवक ने उस अंग्रेज पर डंडे का जोरदार प्रहार करते हुए कहा-'तो तू भी चख हिन्दुस्तानी डंडे का मजा।' डंडे के प्रहार से गोरे युवक का माथा फट गया और वह चीख मारकर फर्श पर गिर पड़ा। यह प्रतिकार लेने वाला भारतीय युवक था एम० पी० तिरुमल आचार्य। सावरकर के विरोध और तिरुमल के डंडे के प्रहार के कारण निन्दा प्रस्ताव पास नहीं हो सका।

१५ अप्रैल १८८१ को ट्रिप्लीकेन (दक्षिण भारत) में जन्मे तिरुमल आचार्य क्रांतिकारी लेखक सुब्रह्मण्यम भारती, लोकमान्य तिलक, अरविन्द घोष व सरदार अजीत सिंह के सम्पर्क से पक्के क्रांतिकारी बन गये। इंग्लैण्ड में वीर सावरकर के साथ मिलकर भारतीय युवकों में क्रांतिभाव जगाने लगे। वहाँ वीर सावरकर ने १८५७ का प्रामाणिक इतिहास (मराठी में) लिखा, तो छपने से पूर्व ही उस पर इंग्लैण्ड और भारत में प्रतिबन्ध लगा दिया था। तिरुमल आचार्य ने उसका अंग्रेजी अनुवाद किया और हॉलैण्ड जाकर उसे छपवाया। यह कार्य सीधा ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर लेना था। ये वीर उसी के लिए तो सिर हथैली पर लेकर घूमते थे। इसके बाद इनका लंदन रहना कठिन हो गया और ये पुर्तगाल चले गये। अंग्रेजों ने उन्हें वहाँ से भी निकलवा दिया।

प्रथम विश्वयुद्ध शुरू होने पर तिरुमल आचार्य जी अमेरिका पहुँच गये और क्रांतिकारी पार्टी के कार्यों में सहयोग देने लगे। भारतीय क्रांतिकारियों ने उन्हें जर्मनी बुला लिया। बाद में राजा महेन्द्रप्रताप की अन्तरिम आजाद हिन्द सरकार ने काबुल से शिष्ट मंडल (दूसरे) का सदस्य बनाकर उन्हें रूस भेजा। रूसी लोगों पर आचार्य जी का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। एक रूसी युवती ने इनसे विवाह कर लिया।

thearyasamaj.org

सन् १९२२ में वे पत्नी सहित जर्मनी चले गये। अंग्रेजों का शासन रहते हुए वे भारत में नहीं आ सकते थे। १९४८ ई० में इन्होंने भारत पहुँच कर मातृभूमि को प्रणाम किया।

श्री उदयवीर विराज ने लिखा है- (तब) 'भारत में शासन की कुर्सियों पर काले अंग्रेज बैठे थे। उन्हें स्वतंत्रता के लिए जूझने वाले क्रांतिकारियों की ओर आँख उठाकर देखने की ही फुर्सत नहीं थी। सच तो यह है अपने घनिष्ठ मित्रों के सिवाय उनके पास उन कांग्रेसी स्वयं सेवकों की दुर्दशा को भी देखने का समय नहीं था, जो उनके आह्वान पर सन् १९२० और १९३० में जेलों में गयें थे।' (श्रीमती इन्दिरा गांधी ने १९७१ में उन्हें स्वतंत्रता सेनानी का सम्मान और पेंशन दिलाई।) फिर तिरुमल आचार्य जैसे क्रांतिकारी को, जो वीर सावरकर मित्र हो, सरकार क्या देती? अन्य बलिदानियों की तरह इनके भी अन्तिम वर्ष घोर गरीबी में बीते। २० मार्च १९६४ को मुम्बई के भाटिया अस्पताल में यह वीर सदा के लिए सो गया।

अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे- जैसे वीर भगतसिंह लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेकर लगभग २३ वर्ष को उम्र में राजगुरु व सुखदेव के साथ फांसी चढ़े, ऐसा ही उनसे लगभग दो दशक पूर्व महाराष्ट्र की धरती पर हुआ था। नासिक में मिस्टर जैक्सन ने न्यायाधीश के पद पर नियुक्त होने के बाद देशभक्तों पर कहर बरसाना शुरू कर दिया। उसने भारतीय युवकों के वन्देमातरम् कहने पर रोक लगा दी। देशभक्त वकील वामन सखाराय खरे के राष्ट्रीय भाषणों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। उनकी वकालत की सनद जब्त कर ली तथा उन्हें पागल घोषित कर धारवाड़ जेल में डाल दिया। रामायण, महाभारत की कथाओं के माध्यम से राष्ट्रीय विचारों का प्रचार करने वाले श्री तावे शास्त्री पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। इतना ही नहीं, देशभक्ति की कविताएं लिखने के कारण वीर सावरकर के बड़े भाई गणेश सावरकर को राजद्रोह का आरोप लगाकर व आजीवन कारावास की सजा देकर काला पानी (२८ फरवरी १९०९ ई०) भेज दिया।

मानवता के इस कलंक को मिटाने का निश्चय किया लगभग १९ वर्षीय तरुण वीर अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे ने। वीर सावरकर के 'अभिनव भारत' के सदस्यों ने मिस्टर जैक्सन को मारने के लिए जिन पिस्तौलों का प्रयोग किया, वे वीर सावरकर द्वारा चतुर्भुज के माध्यम से (२० नई ब्राउनिंग पिस्तौल) लंदन से भेजी गई थीं। कान्हेरे के साथ थे दो मुख्य साथी-विनायक नारायण देशपांडे और कृष्ण गोपाल सर्वे (आण्णा कर्वे)। तीनों वीर २१ दिसम्बर को विजयानन्द भवन में पहुँच गये जहाँ जैक्सन को नाटक का मंचन देखने आना था। वहीं कान्हेरे ने उसे ढेर कर दिया। इन्हें पकड़ लिया गया। सात लोगों पर मुकदमा चला। २९ मार्च १९१० को इन तीनों वीरों को फांसी की सजा सुनाई गई और १९ अप्रैल को यह त्रिमूर्ति मां की वन्दना करती हुई फांसी पर चढ़ गई।

विचारकों की दृष्टि में उन हुतात्माओं की कार्यशैली दोषपूर्ण हो सकती हैं, पर उनका लक्ष्य बिल्कुल निर्दोष और महान था। उनके कार्य के प्रभाव को कितना ही छुपाएँ, वह छुप नहीं सकता। क्रांतिवीर मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है-''हम यह मानने में असमर्थ हैं कि इन घटनाओं का हमारी राष्ट्रीय चेतना पर कोई असर नहीं हुआ। यह कह देना आवश्यक है कि इन अलमस्तों का हमारी राष्ट्रीय सुषुप्त चेतना पर गहरा असर पड़ा और राष्ट्रीय मनोजगत् में इसकी बहुमुखी प्रतिक्रिया हुई।''

योगेशचन्द्र चटर्जी- मई १९२७ ई० में भगतसिंह ने 'विद्रोही नाम से 'किरती' में 'काकोरी के वीरों से परिचय' शीर्षक से लिखा था-'अब जिस नौजवान का जिक्र होगा उसे यदि हम महापुरुष कह दें, तो कुछ झूठ न होगा। वह वीर श्री जोगेशचन्द्र चटर्जी हैं। आप कोमिल्ला (ढाका) के रहने वाले हैं। वह बी० ए० में फिलासफी के विद्यार्थी थे। प्रोफेसर आप पर बहुत खुश थे और कहते थे कि लड़का बड़ा होनहार है। लेकिन आपने कालेज तो क्या, पूरी दुनिया की फिलासफी पर लात मार दी और सब कुछ छोड़कर युगान्तर दल में जा मिले। आपको डिफेन्स आफ इण्डिया एक्ट के अनुसार गिरफ्तार किया गया और अकथनीय व असहनीय कष्ट दिये गये। एक दिन आपके सर पर पाखाना डाल दिया गया और चार दिन तक कोठरी में बंद रखा गया। मुंह धोने तक के लिए पानी नहीं दिया गया। लेकिन आपके पास चुप से अधिक क्या रखा था!'

क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण पुलिस जोगेशचन्द्र चटर्जी के पीछे पड़ी हुई थी। एक बार तो वे नौकर के वेश में (कोमिल्ला से) पुलिस को चकमा देकर निकल गये थे। पुनः ९ अक्तूबर १९१६ को कलकत्ता में पथरिया घाट से गिरफ्तार कर लिये गये। ऊपर की पंक्तियों में उन्हीं कष्टों का वर्णन है। कलकत्ता की प्रैसीडैंसी जेल में उन्हें दो साल रखा गया। अपने साथ होने वाले दुर्व्यवहार के विरोध में जोगेशचन्द्र चटर्जी ने अन्न जल त्याग दिया। एक सप्ताह के बाद उन्हें राजशाही जेल में भेजा गया। चार साल तक बिना मुकदमा चलाये जेल में रखा और १ सितम्बर १९२० को रिहा किया गया।

जेल से निकलकर वे 'अनुशीलन समिति' का संगठन उत्तर प्रदेश में फैलाने के लिए बनारस और कानपुर में रहे।

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

thearyasamaj.org

कहानी

देवी मैया का प्रकोप

❒रश्मि बिन्दल

अंधेरे में एक बार फिर शेर की दहाड़ गूंज गयी। एक तो सुनसान जगह, उस पर बिल्कुल अंधेरी रात- रामलुभाया बुरी तरह डर गया। बाकी रात जैसे तैसे उसने थर-थर कांपते हुए ही काटी।

रोज की तरह रामलुभाया सुबह-सुबह दो मील पैदल चलकर घर पहँचा। उसकी पत्नी तारा ने पहले से ही खाना तैयार किया हुआ था। रामलुभाया ने फटाफट खाना खाया और अपनी चारपाई पर लेट गया। परंतु आज उसे रोज की तरह लेटते ही नींद नहीं आई। काफी देर तक वह करवटें बदलता रहा।

'क्या बात है?' तारा ने पूछा, 'आज तुम कुछ परेशान से लग रहे हो।'

'नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।' रामलुभाया ने बात को टालना चाहा।

'कुछ बात तो है, जो तुम सारी रात जागकर भी इस समय सो नहीं पा रहे हो।' तारा बड़बड़ायी, 'मै तो कहती हूँ कि यह खेतों की चौकीदारी की नौकरी छोड़ दो, और कुछ नया काम करो। न सोने का ढंग रह गया है न खाने-पीने का। और अब न जाने क्या बात है जो मुझसे छुपा रहे हो।'

रामलुभाया ने तारा को पूरी बात बताना ही ठीक समझा। बोला-'कल रात एक अजीब घटना घटी। मैं खेत में बैठा बीड़ी पी रहा था कि अचानक जोर से किसी शेर के दहाड़ने की आवाज सुनाई पड़ी। समझ नहीं आया कि आवाज आई कहाँ से? इस इलाके में तो आसपास शेर है भी नहीं। बार-बार यही दिमाग में आता है कि कहीं कोई सपना--।'

रामलुभाया अपनी बात पूरी कह भी न पाया था कि तारा चिल्लाई- 'हाय दैया!'

'क्या हुआ?' रामलुभाया ने घबराकर पूछा।

'अरे! तुम्हें याद नहीं, तुमने कुछ दिन पहले माता के जागरण में जाने से मना कर दिया था?'

'जागरण में न जाने का इस बात से क्या वास्ता?' रामलुभाया ने पूछा।

'ओफ्फोह! तुम भी कितने नासमझ हो। क्या तुम नहीं जानते कि देवी मैया की सवारी शेर है? तुम्हारे जागरण में न जाने के कारण माता नाराज हो गई हैं और अब तुम्हें सबक सिखाने के लिए उन्होंने अपने वाहन को भेजा है। अब तुम्हारी खेर नहीं।' 'हे देवी मैया, हमारी रक्षा करो! हमारा अपराध क्षमा करो!'

तारा की बात सुनकर रामलुभाया सोच में पड़ गया। फिर बोला, 'नहीं, नहीं, ऐसा कुछ नहीं हुआ है। जरुर मेरे कान बज रहे होंगे। मैं आज ही जाकर वैद्य जी से दवा ले आता हूँ।'

'एक गलती तो तुम कर ही चुके हो, और अब दूसरी करने जा रहे हो! देवी मैया के शेर को वैद्य जी क्या जानें? सीधे पंडित जी के पास चलो। वे ही हमें इस संकट से निकाल सकते हैं।'

तारा उसी समय रामलुभाया को पंडित जी के पास ले गयी और हाथ जोड़ कर सारी बात बताई। सुनते ही पंडित जी उछल पडे, 'राम! राम!! इतना बडा अनर्थ! देवी के प्रकोप को तुम नहीं जानते। वह तो अच्छा हुआ कि देवी मैया के शेर ने अभी तुम्हें अपनी दहाड़ ही सुनाई है। अगर खुद प्रकट हो जाता तो--?' और नाटकीय ढंग से पंडित जी वाक्य बीच में ही छोड़कर सिर हिलाने लगे।

'पंडित जी, हम इसीलिए तो आपके पास आये हैं।' तारा बोली।

'अब मैं क्या कर सकता हूँ? अपनी गलती का परिणाम तो तुम्हें भुगतना पड़ेगा।'

'नहीं महाराज, ऐसा न कहिए, कुछ उपाय तो होगा ही!' तारा गिड़गिड़ायी।

पंडित जी ने रामलुभाया की ओर देखा। वह इस वार्तालाप से काफी घबरा गया था। पंडित जी ने सोचा, 'इस समय लोहा गर्म है, चोट करना ठीक रहेगा।' फिर बोला, 'मैं तो बैठा ही तुम लोगों के कष्ट दूर करने के लिए हूँ। देवी को शांत करने के लिए मैं जाप करुँगा- मगर इससे कुछ खर्चा-'

'खर्चा तो होता ही रहता है पंडित जी, आप हमें हिसाब बता दीजिए।'

'तो ठीक है। सामान मैं स्वयं ले आऊँगा। तुम कहाँ-कहाँ भटकोगे। एक हजार रुपये सामान के खर्च होंगे और पांच सौ रुपये मेरी दक्षिणा।'

'परन्तु यह तो बहुत ज्यादा हैं, मैं तो गरीब--'

रामलुभाया ने कहना चाहा, पर तारा ने बीच में ही टोक दिया, 'इन्हें कुछ समझ नहीं है पंडित जी, आप काम शुरु करिए। रुपये मैं भिजवाती हूँ। तब तक ये एक सौ एक रुपये स्वीकार कीजिए।'

thearyasamaj.org

'खुश रहो' पंडित जी बोले, 'मैं जाप की तैयारी शुरु कर देता हूँ। तुम जाते ही बाकी रुपये भिजवा दो।'

तारा और रामलुभाया घर आ गये। 'अब तुम चैन से सो जाओ!' तारा ने कहा।

और सचमुच रामलुभाया को लेटते ही नींद आ गयी। शाम को उठा तो तरोताजा महसूस कर रहा था। 'जरुर यह पंडितजी के जाप का ही असर है!' उसने सोचा।

उस रात रामलुभाया निश्चिंत होकर खेत पर गया। परंतु अभी आधी रात ही बीती होगी कि अंधेरे में एक बार फिर शेर की दहाड़ गूंज गयी। एक तो सुनसान जगह, उस पर बिल्कुल अंधेरी रात-रामलुभाया बुरी तरह डर गया। बाकी रात जैसे तैसे उसने थर-थर कांपते हुए ही काटी। सूरज की पहली किरण फूटते ही वह सरपट अपने गांव की ओर भागा और तारा को लेकर पंडित जी के पास जा पहुँचा। पंडितजी को पूरी बात पता चली तो बोले, 'जितना मैं समझ रहा था, मामला उससे ज्यादा गंभीर है। मैंने कल ही जाप पूरा कर दिया था, पर लगता है मैया इससे खुश नहीं हुई। अब तो एक ही रास्ता है।'

'वह क्या?' तारा ने पूछा।

'वह यह कि तुम स्वयं एक जागरण का आयोजन कर के माता को प्रसन्न करो।'

'जागरण?' दोनों के मुंह से एक साथ निकला।

'मगर जागरण कराने की हिम्मत हम में कहाँ?' रामलुभाया बोला।

'तुम इरादा तो करो, हिम्मत देवी देंगी। कहीं से रुपयों का प्रबंध करके मुझे दे दो। मैं सारा काम सस्ते में करवा दूँगा। मेरा साला एक कीर्तन मंडली में काम करता है। वह भी कुछ मदद कर देगा।'

'कु-- कुल कितना खर्चा आएगा?' रामलुभाया ने डरते-डरते पूछा।

'यही कोई दस हजार रुपये के करीब। देखो, पैसा तो फिर कमा लोगे। जान है तो जहान है। आगे तुम्हारी मर्जी।'

तारा और रामलुभाया मुँह लटकाकर वापस आ गये। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इतना रुपया कहाँ से आएगा।

'सुनो, मेरे ये कड़े बेच देंगे, चार पांच हजार के तो बिकेंगे ही।' तारा ने कहा। उसके पास चांदी के चार मोटे-मोटे कड़े थे।

'पर यह तो मेरी जीवन भर की कमाई है!'

'है तो मुसीबत के समय काम आने के लिए ही न!' तारा बोली, 'बाकी उधार लें लेंगे।'

काफी सोच विचार के बाद यह तय किया गया कि रामलुभाया अपने मालिक, सेठ अमर नाथ से छह हजार रुपये उधार मांगेगा। सेठ जी शहर में रहते थे। हर रविवार के दिन वे अपनी पत्नी व इकलौती बेटी पारुल के साथ अपनी खेती पर आते थे। पारुल दसवीं कक्षा में पढ़ती थी और बहुत ही होशियार लड़की थी।

अगले रविवार रामलुभाया सेठ अमरनाथ से मिलने जा पहुँचा।

'आओ रामलुभाया, कैसे हो?' सेठ जी ने पूछा।

'आपकी दया है मालिक' रामलुभाया बोला।

'मगर आपसे एक विनती है। मेरे ऊपर भारी विपदा आन पड़ी है। मुझे कुछ रुपयों की जरुरत है। अगर आप छह हजार रुपये उधार दे सकें तो कृपा होगी। मैं पाई-पाई चुका दूँगा।' कहते कहते उसका गला रुंध गया।

'ठीक है तुम कल शहर आकर रुपये ले लेना।'

तभी पास बैठी पारुल ने पूछा, 'लेकिन रामलुभाया, तुमने यह तो बताया नहीं कि रुपये क्यों चाहिएँ। हो सकता है पापा तुम्हारी उसमें भी कुछ मदद कर सकें।'

'अब क्या बताएँ, बिटिया' रामलुभाया बोला, और उसने अपनी दुखभरी कहानी सुना दी।

'तो तुम जागरण इसलिए करवाना चाहते हो कि देवी शांत हो जाएं और उनका शेर तुम्हें खा जाने का इरादा छोड़ दे?' पारुल ने हंसते हुए कहा।

'सुनो रामलुभाया, अगर तुम रुपये लेना चाहते हो तो ले लो, मगर इतना समझ लेना कि शेर की दहाड़ कुछ दिनों में अपने आप ही बंद हो जाएगी।'

'क्या मतलब?'

'मतलब सिर्फ इतना है कि यहाँ से कुछ दूरी पर ही सर्कस आकर ठहरा हुआ है। आज यहाँ आते समय हमने उसके तंबू-डेरे देखे थे। सर्कस में जानवर तो होते ही हैं- तुमने जरुर सर्कस के किसी शेर की दहाड़ सुनी होगी। दिन मे भी शेर दहाड़ते होंगे, पर दिन में तुम अपने गांव में होते हो, जहाँ तक दहाड़ की आवाज नहीं जाती। हाँ, लेकिन रात के सन्नाटे में इन खेतों तक साफ आवाज आ सकती है। अब इसके लिए अगर तुम जागरण करवाना चाहते हो तो जरुर करवाओ।'

रामलुभाया ने यह बात सुनी तो उसका मुँह खुला का खुला रह गया। वह सोच रहा था- क्या इतनी-सी बात पर, अपनी अंधविश्वासी पत्नी और एक चालबाज पंडित के कारण, वह अपनी जीवन भर की कमाई पानी की तरह बहाने को ही नहीं, कर्ज के भारी बोझ तले दबने को भी तैयार हो गया था?

thearyasamaj.org

चिन्ता चिता समान है

❑प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक

चिंता रूपी दैत्य पर जितनी जल्दी विजय पाई जाये, उतना ही अच्छा है। जब भी किसी बात की चिंता लगे उसके कारण का पता करके समाधान करने की कोशिश करनी चाहिये। संयम से काम लेना चाहिए।

वैसे तो मनुष्य का जीवन ही चिन्ता से शुरू होता है। उसके पैदा होते समय मां बाप को चिन्ता होती है कि बच्चा ठीक ठाक पैदा होगा या नहीं, उसके पैदा होते समय उसकी जननी ठीक ठाक रहेगी या नहीं, लड़का होगा या लड़की, जो भी पैदा हुआ ठीक ठाक रहेगा या नहीं, उसे कोई तकलीफ तो नहीं हो जायेगी। इस तरह जन्म के समय से ही मनुष्य का सम्बन्ध चिंता से जुड़ा हुआ है जो कि मौत तक उसका पीछा नहीं छोड़ती। माता पिता को बच्चों को अच्छे स्कूल में दाखिला कराने की, अच्छे नंबरों में पास होने की चिंता होती है। बच्चे को भी स्कूल में अपने सहयोगियों के साथ खेलने की इतनी खुशी नहीं होती जितनी कि नियमित तौर पर होमवर्क करके विभिन्न परीक्षाओं में अच्छे अंकों में पास होने की चिंता होती हैं। बड़े होकर अच्छा रोजगार प्राप्त करके, विवाह शादी तथा सफल परिवारिक जीवन की चिंता होती है।

आज हर आदमी किसी न किसी चिंता में फंसा हुआ है। किसी की अधिक धन कमाकर गरीबी दूर करने की चिंता है। किसी को अपने व्यापार/उद्योग/नौकरी में तरक्की करने की चिंता है। किसी को यह चिंता है कि उसके व्यवसाय से सम्बंधित उसके सहयोंगियों के साथ उसकी पटती क्यों नहीं। अधिकांश घरों में पति-पत्नी की आपस में पटड़ी नहीं बैठती। दोनों को इस बात की चिंता होती है कि कोई तीसरा उसके जीवन में घुसपैठ तो नहीं कर रहा। मां-बाप को इस बात की चिंता होती है कि उसके बच्चे लायक, ईमानदार, परिश्रमी, आज्ञाकारी, स्वावलम्बी तथा प्रतिष्ठित बनें। जो लोग राजनीति में हिस्सा लेते हैं उन्हें इस बात की चिंता होती है कि कहीं उसके प्रतिद्वंद्वी उसके मुकाबले में आगे न निकल जायें और चुनाव होने पर कहीं वे हार न जायें। या फिर कहीं वे मंत्री और वह भी महत्त्वपूर्ण विभाग के मंत्री बनने से न चूक जायें।

आजकल के युवाओं को अपनी सुंदरता की ज्यादा चिंता होती है। वे मेकअप करते हैं, डाइटिंग करते हैं ताकि वे दूसरों के मुकाबले ज्यादा आकर्षक तथा प्रभावी दिखाई दें। अनेक लोग दो नंबर का धंधा करते हैं। खाने पीने की चीजों में मिलावट करते हैं, माप-तोल में भी बेईमानी करते हैं ताकि ज्यादा लाभ कमा सकें, परंतु उन्हें सदा इनकम टैक्स वालों की तथा सरकार द्वारा उनकी चीजों में मिलावट के पकड़े जाने की चिंता लगी रहती है। यूँ तो सरकारी कर्मचारी, अधिकारी तथा मंत्री रिश्वत लेते हैं तथा अनैतिक काम करते हैं फिर भी उन्हें इस बात की चिंता लगी रहती है कि कोई गुपचुप तरीके से विडियो फिल्म न बना रहा हो।

परिवार में कोई बाहर गया हुआ हो, उसके वापिस सुरक्षित आने तक हमें चिंता सताती रहती है। बीमार आदमी को अपनी बीमारी की चिंता सताती रहती है। अगर कोई अमीर आदमी है, उसका बेटा नहीं है तो उसे अपने उत्तराधिकारी के न मिलने तथा खून पसीने की कमाई धन दौलत के बर्बाद होने की चिंता तो होती है।

इस तरह हम सभी किसी न किसी चिंता के शिकार होते रहते है। चिंता एक मानसिक स्थिति है जिसमें आदमी किसी चीज की कमी, किसी चीज खो जाने, प्रतिद्वंद्वी या विरोधी द्वारा नुकसान करने या आक्रमण किये जाने, अच्छा जीवन साथी न मिलने, बीमार होने, मर जाने आदि अनेक बातों से आशंकित रहता है। चिंता के कारण आदमी को रात को नींद नहीं आती, भूख नहीं लगती है, डर लगा रहता है, तनाव पैदा होता है, कुछ अच्छा नहीं लगता है, किसी के साथ बात करने को मन नहीं करता, बेचैनी होती है, आदमी को कोई बीमारी हो जाती है, कई बार हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं, आदमी चिड़चिड़ा हो जाता है।

अगर चिंता का समय रहते समाधान न किया जाये तो परिणाम खतरनाक हो सकते हैं। कई लोगों का कामधंधा ही चौपट हो जाता हैं, कई लोगों की गृहस्थी ही खराब हो

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

संकल्प शक्ति का चमत्कार

❑महात्मा ओममुनि
वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर, रोहतक (हरि०)

प्रत्येक मानव के व्यक्तित्त्व और उसकी सफलता के पीछे मुख्य भाग उसकी संकल्प शक्ति का ही होता है। बिना संकल्प शक्ति के किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करना संभव नहीं। केवल दृढ संकल्प शक्ति से एक से एक बढ़कर चमत्कार दिखलाये जाते है। संकल्पशक्ति ही मनुष्य के जीवन में उन्नति और अवनति का कारण होती है। उपनिषद् की श्रुति के अनुसार 'संकल्पमयोऽयं पुरुषः' अर्थात् मनुष्य संकल्प का ही बना हुआ है। भगवान मनु का कथन है-

संकल्पमूलः कामो वै यज्ञः संकल्पसम्भवः।
व्रतनियमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः।।

अर्थात् सब प्रकार की कामनाओं का मूल यह संकल्प है। यज्ञ संकल्प से उत्पन्न होता है। व्रत-नियम-धर्म सब इसी संकल्प से उत्पन्न होने वाले माने गये हैं।

आज हमें जितने भी महापुरुष दिखाई पड़ते है, जिनका नाम संसार में आदर से लिया जाता है, उनके जीवन को उच्च और पवित्र बनाने का कारण संकल्प शक्ति ही है।

प्रारब्ध कर्म संकल्प द्वारा ही क्रियमाण होते हैं, जैसे कहा जाता है- 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः' इसलिए मनुष्य यदि अपने संकल्पों को विशुद्ध रखे और जब वे मलिन व अपवित्र होने लगें तब यह जानकर कि मुझ पर कोई विपत्ति आने वाली है, तत्काल अपने संकल्प और विचारों को शुद्ध और पवित्र बनाले तो दुर्भाग्य उसे कभी भी भयभीत नहीं कर सकेगा। यदि पवित्र विचारों वाले मनुष्य पर अचानक कोई विपत्ति आ भी जाये तो उस बोझ को दूसरे लोग सहायक बनकर बाँट लेते हैं अर्थात् उसके सहायक बन जाते हैं। इसके विपरीत बुरे व्यक्ति पर आये संकट में कोई सहायक नहीं बनता अपितु उल्टे बढ़ाने वाले अनेक हो जाते हैं। जो मनुष्य अपने जीवन में दुःखों को कम करने की इच्छा करता है तो उसको चाहिए कि वह अपनी संकल्प शक्ति में वृद्धि करे और उसका सदुपयोग करना सीखे।

उगते हुए नए पौधे को उखाड़ना आसान है, किन्तु उसके बड़ा वृक्ष बन जाने पर उसे जड़ से उखाड़ना मनुष्य की शक्ति से बाहर हो जाता है। ठीक उसी प्रकार उत्पन्न होते हुए संकल्पों को उखाड़ना और उनके स्थान पर शुद्ध व पवित्र संकल्पों की रचना/निर्माण अत्यन्त सुगम होता है। अत: जो व्यक्ति उठते हुए बुरे संकल्पों को उसी समय मिटा देता है

ओं यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।१।।
जो दिव्य मन जाग्रत अवस्था में दूर निकल जाता है, इसी प्रकार सोने की दशा में भी बहुत दूर जाने वाला ज्योतियों की ज्योति अर्थात् इन्द्रियों का प्रकाशक मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२।।
कर्मशील, मनीषी, धीर पुरुष जिसके द्वारा बड़े-२ कार्य कर दिखाते हैं, जो समस्त प्रजाओं (इन्द्रियों) के अन्दर एक अपूर्व पूज्य सत्ता हैं, वह मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।३
जो नये-२ अनुभव कराता है, जो समस्त इन्द्रियों के अन्दर एक अमरज्योति है, जिसके बिना कोई कर्म नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्त होता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।४।।
जिस अमृत मन के द्वारा यह भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान जाना जाता है, और जिसके द्वारा सात होताओं वाले यज्ञ का विस्तार किया जाता है, वह मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।५।।
जिसमें ऋचाएँ, साम, यजु इस प्रकार टिके हुए हैं जैसे रथ की नाभि में अरे, जिसमें इन्द्रियों की सारी प्रवृत्ति पिरोयी रहती है, वह मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।६।।
चतुर सारथि के समान मनुष्य को इधर उधर ले जाता है, जो जरारहित और चंचल है, वह मेरा मन शिवसंकल्पों वाला होवे।

यजुर्वेद- ४०

thearyasamaj.org

वह उससे सम्बन्धित कर्म और उसके दुःखरूपी कर्मफल से बच जाता है। इसीलिए तो वेद मन्त्रों में बार-२ प्रार्थना की गई है कि-मेरा मन पवित्र व शुभ संकल्पों वाला हो।

संकल्प विद्या की शक्ति का पूरा-पूरा अनुभव करना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि संसार के प्रत्येक पदार्थ में यह शक्ति विद्यमान है। आजतक जितनी मानसिक शक्ति जैसे-मैस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म, टैलीपैथी, स्प्रिचुअलिज्म आदि मनुष्य को ज्ञात हुई हैं, उन सबमें यही अलौकिक शक्ति काम करती है। जल में तरंगों की तरह शब्द की तरंगें भी दूर-२ तक जाती हैं। आकाश के सूक्ष्म मण्डलों (ईथर) पर संकल्प की तरंगें दौड़ती हैं, काम करती हैं और दूर-२ तक पहुँच जाती है। ईथर की शक्ति जो आकाश में विद्यमान है, हमारे मस्तिष्क में भी विद्यमान है। निरन्तर विचार से उसमें गति उत्पन्न होती है और वे उसी प्रकार निकलती हैं जैसे विद्युत् की तरंगें निकलती हैं। जिन विचार तरंगों के साथ संकल्पशक्ति नहीं होती वे शीघ्र नष्ट हो जाती हैं और जिन विचार तरंगों के साथ संकल्पशक्ति का बल होता है, वे रुकावटों और विरोध के होते हुए भी उस समय तक निरंतर दौड़ती रहती हैं जब तक उसको अनुकूल विचारों वाला मन न मिल जाये, जो उस विचार के साथ सहानुभूति और अनुकूलता रखता हो।

यदि घृणा या शत्रुता के विचार इसी संकल्पशक्ति की सहायता से किसी के लिए भेजेंगे तो वे विचार जीवित शक्ति बन जायेंगे और वे तब तक निरंतर दौड़ते रहेंगे जब तक कि उसके मन तक न पहुंच जायें, जिसके लिए भेजे गये थे। इसके अतिरिक्त वे अन्य बहुत से मनों के अन्दर भी अपना प्रतिबिम्ब छोड़ जाते हैं। प्रेम का जो प्रत्येक विचार बाहर जाता है, अपने परिणाम में प्रेम की पूरी शक्ति लेकर उसी के पास वापस आ जाता है, इसलिए यह कहावत है कि- 'मन का मन साक्षी है।' क्योंकि आकाश में अनेक प्रकार के विचार चक्कर लगाते रहते हैं और जिस प्रकार के विचारों की मनुष्य में ग्रहण करने की प्रकृति होती है, उसी प्रकार के विचारों को आकाश से अपनी ओर खींच लेता है। जैसे जितनी तरह के बीज भूमि में बोये जायेंगे वे सब अपने-२ अनुकूल परमाणुओं को ही भूमि से खीचेंगे। यदि कोई बुरा विचार मन में उत्पन्न हो जाये तो फिर उसी प्रकार के विचारों की लड़ी मन में बन जाती है। और वह तब तक बन्द नहीं होती जब तक कि स्वयं मनुष्य अपनी प्रबल संकल्पशक्ति से अपने मन को उस ओर से रोक न ले। आकाश में अच्छे से अच्छे और बुरे से बुरे विचार विद्यमान हैं, केवल उन विचारों को ग्रहण करने के लिए एकाग्रचित से उस ओर मन को लगाना पर्याप्त है। जब तत्वदर्शी किसी विषय या पदार्थ पर विचार करता है, तब उसी सम्बन्ध में नई-२ बातें उसके मन में उठने लगती हैं और ये ऐसी बातें होती हैं जो स्वयं सोचने वालों के लिए भी सर्वथा नई व विस्मियकारक/आश्चर्यजनक होती हैं।

यदि कोई किसी कार्य में असफल है, इसका कारण उसका दुर्भाग्य नहीं, बल्कि उसके संकल्प की निर्बलता है। मनुष्य के अन्दर यह बहुमूल्य गुप्त शक्ति ऐसी है कि जो कोई इससे काम लेना शुरू कर देता है उसको वह महान् बना देती है। मानव के संकल्प में अद्भुत शक्ति है, यदि आप जीवन में सफल होना चाहते हैं तो इस शक्ति को अपने अन्दर उत्पन्न और विकसित करें।

संकल्प शक्ति को पूरा विकास देने के लिए दृढ़ आत्म विश्वास की आवश्यकता है और आत्मविश्वास की दृढ़ता आस्तिकता अर्थात् ईश्वर भक्ति से होती है।

अध्यात्म विद्या के आचार्य जब अपने किसी शिष्य से कोई काम करवाना चाहते हैं, तब अपने विचारों को उसके मन में रख देते हैं। ये विचार उसके अन्दर पहुँचकर उसको वही कार्य करने की प्रेरणा करते हैं। यही मानसिक प्रेरणा है, यही गुप्त आध्यात्मिक सम्बन्ध और आत्मिक सहायता है जो पूर्व के सन्त-महात्मा अपने शिष्यों के साथ रखते थे। यदि हम किसी के प्रति बुरे विचारों की भावना करेंगे व वहाँ दुःख और घृणा के विचारों की भावना करेंगे तो वे अधिक मात्रा लेकर लौटकर हमें मिलेंगे, और यदि प्रेम व स्नेह के विचार भेजेंगे तो वे भी अपना प्रभाव डालकर अधिक प्रेम उत्पन्न करेंगे। इसी कारण से हमारा मन जिससे घृणा करता है, वह भी उसी प्रकार हमसे घृणा करेगा और जिसके प्रति हम प्रेम के विचार करते हैं, उसके मन में भी हमारे प्रति प्रेम के विचार उत्पन्न होंगे। हमारे शास्त्रों में तो प्रत्येक मनुष्य को जीव मात्र की भलाई के लिए उपदेश दिया है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

अर्थात् सभी जीवों को सुख प्राप्त हो, सब प्राणी नीरोग हों, सबका कल्याण हो, किसी को भी दुःख न हो।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

thearyasamaj.org

किसके गीत गायें या किसकी स्तुति करें?

❐अध्यापक देवराज आर्य, आर्य टेंट हाऊस, रोहतक मार्ग जींद-१२६१०२

उसकी प्राप्ति के आगे किसी पदार्थ की प्राप्ति उत्तम नहीं है।

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्ने रथं न वेद्यम्।
सामवेद ५

पदार्थः- (अग्ने) हे ज्ञान प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! (वः) तुझ (मित्रम् इव-प्रियम्) मित्र-समान प्रिय को (वेद्यं रथं न) वेदि=पृथिवी पर रमण करने योग्य प्रिय रथ की भाँति, मेरे अन्तः करण में रमण करने वाले (प्रेष्ठम्-अतिथिम्) मित्र और रथ से भी प्रिय अतिथिदेव की (स्तुषे) मैं स्तुति करता हूँ।

हे परमात्मन्! तू मेरा प्रियतम अतिथि है, तू मेरे हृदय गृह या अन्तः करण सदन में आता है। यद्यपि मुझे मेरा शरीर और प्राण प्रिय हैं परन्तु प्रभु आप तो मुझे मेरे शरीर और प्राण से भी अत्यन्त प्रिय हैं, मैं आपकी स्नेह-पूर्ण स्तुति करता हूँ। मुझे यह मेरा शरीर जोकि लौकिक रथ है, प्यारा है क्योंकि यह देह का सहारा है। लौकिक मित्र भी प्यारा है, वह मन का सहारा है, परन्तु परमात्मन्! तू अत्यन्त प्यारा है, मेरी आत्मा का सहारा है। अतः आप मेरे अतिथि बनकर मेरे शरीर में, नस-नस में बस जाओ, मेरे प्राण में रम जाओ तथा मेरी आत्मा में समा जाओ। ऐसे श्रेष्ठ अतिथि को पाकर मेरी आत्मा ज्ञान प्रकाश से प्रदीप्त हो जायेगी तथा मुझे अत्यन्त शांति प्रसाद प्राप्त हो जायेगा।

इस संसार में यदि कोई विशेष जानने योग्य वस्तु है तो वह आत्मा है। आत्मा को जाने और समझे बिना कोई भी व्यक्ति धर्म, समाज, राष्ट्र और परमात्मा को न समझ सकता है और न जान सकता है। आज हमारे दुःख कष्ट-क्लेश तथा तनाव का कारण यही है कि हम अपने कर्त्तव्य-पालन अर्थात् धर्म को भूल गये। क्यों भूल गये धर्म को हम? क्योंकि हमने वैदिक आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय करना तथा वैदिक सत्संग में जाना छोड़ दिया।

उस प्रभु की खोज में निकले जिज्ञासु जरा सावधान होकर इस मार्ग पर पग रखें क्योंकि सत्य, ज्ञान, तप और त्याग के बिना उसका जानना अति कठिन है। वेद तथा आर्ष ग्रंथों के स्वाध्याय से ही उस जगत नियन्ता का ठीक-२ निश्चय हो सकता है।

यदि हम में से कुछ वहाँ गये तो धर्म और आत्मा के विषय में कुछ न समझकर आपसी विवादों और स्वार्थ पूर्ति की मलिन ऐषणाओं में फँसकर भूल गये वैदिक मर्यादा और उच्च वैदिक संस्कारों के महत्त्व को। आत्मा, परमात्मा, धर्म और वेद केवल शब्द मात्र रह गये। वेद ज्ञान को प्राप्त करके भी यदि हम आत्मा को न जान सके तथा धर्म मार्ग पर न चल सके तो केवल वेद-वेद पुकारने से कोई लाभ नहीं हो सकता। वास्तव में 'वेद' का अर्थ ही ज्ञान होता है।

वेद किसने उत्पन्न किये हैं? जो कभी धारण नहीं करता 'न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः' जिसका कुछ भी परिमाण, सीमा या कारण नहीं, जिसकी आज्ञा का पालन ही उसका नाम स्मरण है। जो उपासना किया हुआ अपने उपासकों पर अनुग्रह करता है तथा जिसके नाम का महान यश है।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। यजु० ३१/७

हे मनुष्यो! उस अत्यन्त पूजनीय सच्चिदानन्द स्वरूप, जो सब जगह परिपूर्ण हो रहा है, जो सब मनुष्यों को उपासना के योग्य इष्टदेव और सब सामर्थ्य से युक्त है, उसी परब्रह्म से सब वेद उत्पन्न हुए हैं, उस परमात्मा की उपासना करो। वेदों को पढ़ो और उसकी आज्ञा के अनुकूल वर्त के सुखी हो ओ।

ईश्वर का किया उपदेश, जो वेद है, उसके बिना किसी मनुष्य को यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता। ईश्वर ने सब मनुष्यों के हित के लिए वेदों की उत्पत्ति की है। आर्यसमाज के नियमों में महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' तथा उन 'सब सत्य विद्याओं का आदि मूल परमेश्वर है।' उसकी प्राप्ति कराने में ही सब वेद प्रवृत्त हो रहे हैं, क्योंकि उसकी प्राप्ति के आगे

thearyasamaj.org

किसी पदार्थ की प्राप्ति उत्तम नहीं है। इसलिये हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम उसी परमेश्वर के गीत गायें। हमें उस सुखवर्षक परमात्मा की स्तुति करनी चाहिए जिससे वह अज्ञान-पाप का नाश करके सुख का वर्षाने वाला हो।

कैसी हो हमारी उपासना और हमारा व्यवहार?

हम जैसी स्तुतियाँ उस परमात्मा की उपासना काल में करें, वैसा ही चरित्र हमारा व्यवहार काल में होना चाहिए। उपासक को आध्यात्मिक और सांसारिक एक ही सत्य पर निर्भर रहना चाहिए, क्योंकि वह प्रभु हमारे हृदय की सभी बातों को जानता है। वह कभी प्रवंचना में नहीं आता। परन्तु उस प्रभु के गीत कौन और कब गाते हैं? गीता के निम्नस्थ श्लोक में इसका दिग्दर्शन कराया गया है-

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुनः।
आर्त्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। गीता०७/१६

श्री कृष्ण जी ईश्वर के विषय में समझाते हुए, अर्जुन को कह रहे हैं कि चार प्रकार के लोग ईश्वर का भजन करते हैं - (१) दु:खी (२) सत्यासत्य की खोज करने वाले (३) धन-सम्पत्ति चाहने वाले तथा (४) विवेकी ज्ञानी जन। सबसे अधिक ईश्वर के भक्त वे लोग दिखाई देते हैं जो दु:खों से पीड़ित हैं।

ऐसे लोगों का ध्येय केवल मात्र प्रभु से अपने दु:ख दूर कराने के लिए उसकी स्तुति एवं प्रार्थना करना है। उस समय उसे केवल मात्र वही एक सहारा दिखाई देता है। अपने द्वारा किये गये पाप कर्मों को वह भूल जाता है। वह दु:खी व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति मात्र होना ही परमात्मा की भक्ति समझता है।

दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे ता दु:ख काहे को होय।।

हमें उस सर्वज्ञ, न्यायकारी, सर्वशक्तिमान प्रभु की स्तुति, प्रार्थना, उपासना प्रतिदिन प्रातः सायं अवश्य ही करनी चाहिए। वही परमात्मा आसुरी वृत्तियों का नाशक, पाप हन्ता, अनन्त सुखवर्षक, उत्तम भोग प्रदान करने वाला तथा दुर्गुण, दुर्व्यसनों को दूर कर स्वस्थ दीर्घ जीवन देने वाला है। परन्तु केवल दु:ख और कष्ट में उस प्रभु को याद करने वाली भक्ति तो केवल उसका दु:ख दूर होने तक ही है। आगे उसका सम्बन्ध भगवान से टूट जाता है। इसका नाम भक्ति नहीं है। ऐसा भक्त कोरा स्वार्थी, कपटी एवं निम्नकोटि का होता है।

(२) अर्थार्थी:- दूसरी श्रेणी के भक्त धन-सम्पत्ति की लालसा में भगवान के गीत गाते हैं। मन्दिरों, देव स्थानों एवं जड़ देवी-देवताओं पर सोना, चांदी एवं नोटों की वर्षा करते हैं। इनके स्थानों पर भण्डारा लगाना, कीर्तन कराना तथा इसी प्रकार की जड़ पूजा के द्वारा उस माया पति से केवल धन के भण्डारे भरने की प्रार्थना दिन-रात करते हैं। उस परमात्मा की आज्ञा क्या है, उसका उनको कोई पता नहीं। ऐसे व्यक्ति स्वयं तो उस निराकार प्रभु से दूर चले ही जाते हैं, साथ ही अनेक भोले-भाले लोगों को भी धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु जड़ मूर्तियों पर विश्वास करना सिखा देते हैं जो कि उस अन्तर्यामी परमात्मा की स्तुति नहीं है। उसकी स्तुति एवं उसके गीत हम वेद मंत्रों के द्वारा गाया करें। वर्तमान में केवल धन ही परमात्मा बन कर रह गया है। आज धन की बढ़ती हुई लालसा एवं भौतिक चकाचौंध ने भुला दिया है परमात्मा, आत्मा, ज्ञान और धर्म को आवश्यकता को! भूल गये हम माता-पिता, गुरु और अतिथि के सम्मान को। परन्तु याद रख लेना- ऐसे ही हम इस भौतिकवाद में उलझे रहे तो मानवता के दर्शन दुर्लभ हो जायेंगे। धन केवल जीवन यापन का साधन है, यह जीवन का लक्ष्य नहीं है।

(३) जिज्ञासु- ऐसा व्यक्ति उस परमात्मा के सच्चे स्वरूप को जानने एवं उसकी प्राप्ति हेतु जिज्ञासा लेकर निकलता है। संयम, सेवा, साधना एवं वैदिक सत्संग के द्वारा उसे पाने, जानने का प्रयत्न करता है। यदि ऐसे जिज्ञासु व्यक्ति को कोई सच्चा, सदाचारी, आस्तिक, त्यागी एवं वेदज्ञाता गुरु मिल जाता है तो वह योग साधना के द्वारा उस निराकार सर्व अन्तर्यामी प्रभु की प्राप्ति के मार्ग पर चलकर अपनी जिज्ञासा शांत कर लेता है। उस प्रभु की खोज में निकले जिज्ञासु जरा सावधान होकर इस मार्ग पर पग रखें क्योंकि सत्य, ज्ञान, तप और त्याग के बिना उसका जानना अति कठिन है। वेद तथा आर्ष ग्रंथों के स्वाध्याय से ही उस जगत नियन्ता का ठीक-२ निश्चय हो सकता है।

(४) ज्ञानी अर्थात् विवेकी- ऐसे भक्त प्रभु को विशेष रूप से प्रिय हैं क्योंकि शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म और शुद्ध उपासना के बिना उस परमात्मा को कोई भी जान नहीं सकता। ज्ञान या विवेक क्या है? किसी भी वस्तु के वास्तविक स्वरूप को जानना ही विवेक है। महर्षि पंतजलि (योग० १/२४) ईश्वर का लक्षण लिखते हैं-

क्लेश कर्म विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।।

जो अविद्यादि क्लेश, शुभाशुभ कर्म, उन कर्मों का फल, फल भोग से बने संस्कार; इन सबसे जो सर्वथा रहित है, वह पुरुषविशेष ईश्वर है।

वह सदैव आत्मा के साथ हृदय में विराजमान रहता हुआ, हमारा हित साधन करता है। वही हमारा सच्चा मित्र एवं हितैषी है। उसी परमात्मा की हम अपनी हृदय रूपी वेदी में ध्यान लगा कर स्तुति करें।

thearyasamaj.org

स्वास्थ्य के लिए अति उपयोगी : बादाम

'आयुर्वेद शिरोमणि' **डॉ० मनोहरदास अग्रावत** एन० डी० विद्यावाचस्पति, (प्राकृतिक चिकित्सक)

स्वास्थ्य के लिए सूखे मेवे उपयोगी और स्वास्थ्य संवर्धक हैं। इनमें 'बादाम' की सर्वोत्तम मानी जाती है।

बादाम के वृक्ष एशिया खण्ड के ईरान, मक्का, मदीना, मस्कत, शीराज आदि स्थानों में बहुत होते हैं। आजकल भारतवर्ष के बगीचों और काश्मीर में भी इसके पौधे लगाये जाते हैं।

इसे संस्कृत में वातांबुफलम् या वाताम्, हिन्दी और बंगला में बादाम, गुजराती और मराठी में-बदाम, तैलिंगी में-वेदम, तामील में-नटवडुम, फारसी में बादाम, अरबी में-लोजम, लैटिन में-एमिग्डेलस् कम्युनी एमेर और अंग्रेजी में अम्लेंड कहते हैं। यह वृक्ष बहुत बड़ा होता है। इसकी दो जातियाँ होती है-कड़वी और मीठी। बादाम पौष्टिक होता है। यह एक मेवा है। इसका तेल भी निकाला जाता है। कडवा बादाम हानिकारक होता है। उसे उपयोग में नहीं लाना चाहिए। मीठे बादामों में भी छिलके की मोटाई के अनुसार दो तरह के बादाम होते हैं, पतले छिलके वाला जिसे कागजी बादाम कहते हैं, और मोटे छिलके वाला जिसे तेली बादाम के नाम से जाना जाता है।

उपयोगिता और मान्यता-

वैज्ञानिक शोधों तथा आहार विशेषज्ञों के अनुसार दिमाग की कार्यशक्ति को सुचारू बनाए रखने में बादाम बहुत उपयोगी है, यह मांस पेशियों को मजबूत बनाने तथा दीर्घायु प्राप्त करने में बहुत सहायता करता है। आयुर्वेद और यूनानी पद्धति के अधिकांश योगों में भी बादाम का इस्तेमाल किया जाता है।

निहीत तत्व-

बादाम में आवश्यक पौष्टिक तत्व-प्रोटीन चिकनाई, कार्बोहाइड्रेट, पानी, कैल्शियम, लोहा, फास्फोरस आदि भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। दिमाग और त्वचा के लिए तो यह अत्यन्त ही उपयोगी है। बादाम में खनिजों और विटामिनों के अतिरिक्त पर्याप्त मात्रा में अनसेचुरेटेड वसा पाई जाती है, जो शरीर के लिए अत्यन्त लाभदायक है। इसकी प्रत्येक १०० ग्राम की मात्रा में ११ ग्राम लिनोलिक एसिड होता है। यही वसा अम्ल सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अनसैचूरेटेड एसिडों में से एक है, जो सीरम कॉलेस्ट्रोल का स्तर कम करने में बहुत सहायक होता है। ये सभी तत्त्व एक साथ क्रिया करते हैं और जिगर के ठीक से कार्य करते रहने में मदद करते हैं।

कच्चा बादाम- सारक, गुरु और पित्तकर होता है तथा कफ, पित्त विकार और वायु का नाश करती है।

पक्का बादाम- उष्ण, स्निग्ध, वातनाशक, कफकर, शुक्रकर और जड़ होता है, रक्त पित्त का नाश करता है।

बादाम का गूदा- मधुर, वृष्य, स्निग्ध, उष्ण, पौष्टिक, कफकर और वात-पित्त नाशक होता है।

श्रेष्ठ आहार- बादाम की गिरी को रात्रि के समय ठण्डे पानी में भिगो दें, सुबह इन्हें छीलकर बारीक पीस लें। यह सफेद पेस्ट की तरह बन जायेगा। इसी पेस्ट को बादाम की चटनी कहते हैं। इसका एक छोटा चम्मच भर प्रातः दूध के साथ सेवन करने से उच्च श्रेणी का प्रोटीन मिलता है। यह वृद्धों व कमजोरों के लिए अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसमें सुगमता से हजम होने वाले पोषक तत्त्व होते हैं। स्नायुओं और दिमाग के थक जाने से कभी-कभार चक्कर आने लगते और आंखों के सामने एकदम अंधेरा सा छाने लगता है। सिर्फ दो बादाम प्रतिदिन दूध के साथ सेवन करने से यह शिकायत दूर हो जाती है। क्योंकि बादाम में थायमिन नामक विटामिन मौजूद रहता है, इसलिए इसे नर्वटानिक या स्नायुओं को ताकत देने वाला कहा जाता है।

खून की कमी पर : शरीर में खून की कमी के कारण चेहरा पीला पड़ने लगता है और कई रोग घर कर जाते हैं। इस कमी को दूर करने में बादाम पर्याप्त मदद करता है, क्योंकि बादाम में ताम्बा 1.15 मि०ग्रा० प्रति १०० ग्राम की दर से कार्बनिक या जैव रूप में मिलता है। लोहा और विटामिनों के साथ मिलकर ताम्बा खून के लाल कणों के निर्माण में तेजी जाता है। इसलिए खून की कमी दूर करने में बादाम बहुत उपयोगी है। बाादम को भिगोकर खाएँ तो काफी फायदा होगा, अन्यथा यह गर्मी पैदा करेगा।

बादाम में कई और खूबियाँ भी हैं- जैसे यह जोड़ों के दर्द को कम करने में सहायक है, बुद्धिवर्द्धक है, रक्ताल्पता (एनीमिया), कफ, दमा, वर्ण विकारों तथा दुर्बलता में पुष्टिवर्धक है। इसमें कैल्शियम और दूसरे पोषक तत्व भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं जो बच्चों के दाँतों और वृद्धों की हड्डियों के लिए बहुत लाभकारी हैं।

thearyasamaj.org

जानते हो!

–आदित्य प्रकाश

❍ हाथी की सूंड में लगभग चालीस हजार पेशियाँ होती हैं, लेकिन हड्डी एक भी नहीं होती।

❍ फेफड़ों में लगभग तीन सौ अरब नन्हीं नन्हीं रक्त वाहिनियाँ होती हैं, यदि इनको फैलाकर आपस में जोड़ दिया जाए तो इनकी लम्बाई पाँच सौ मील हो जाएगी।

❍ इतिहास का सबसे छोटा युद्ध १८९६ में जांजीबार और इंग्लेंड के बीच हुआ था, जांजीबार केवल ३८ मिनट में हार गया था।

❍ अधिक ऊँचाई पर हवाई जहाज में कम ईंधन खर्च होता है।

❍ चींटी दो दिन तक पानी में जीवित रह सकती है।

❍ सबसे बड़ा फूल रेफ्लीसिया होता है। इसका वजन ७ किग्रा तक हो सकता है।

हास्यम्

–प्रतिष्ठा

☯ भिखारी– एक रुपये का सवाल है बाबा!
अन्नु– हरसी से बात करो, मैं तो पहले ही गणित में बहुत कमजोर हूँ।

☯ अन्नु– तुम्हें स्कूल में सबसे अच्छा कौन लगता है?
हरसी– स्कूल का चपरासी।
अन्नु– क्यों?
हरसी– क्योंकि हमेशा छुट्टी की घंटी वही बजाता है।

☯ नन्दू– अंग्रेजों ने भारत में पहला कदम रखने के बाद क्या किया?
गोलू– जरूर उन्होंने दूसरा कदम रखा होगा।

☯ सोनू– तुम्हारे ऊपर चीडिया ने बीट कर दी, फिर भी तुम खुश हो रहे हो?

☯ मोनू– शुकर मना रहा हूँ–– कि गाय भैंस आसमान में नहीं उड़तीं।

☯ हरसी– जो दिन में सूरज न निकले तो क्या होगा?
आदी– अंधेरे में स्कूल जाना पड़ेगा–– और क्या?

☯ एक आदमी का आपरेशन करके उसे बंदर का दिल लगा दिया गया। कुछ दिन बाद डॉक्टर ने उसकी पत्नी से मरीज का हाल चाल पूछा तो उसने जवाब दिया– कोई परेशानी नहीं है डॉक्टर जी, बस दिन भर छत पर बैठकर पीठ खुजलाते रहते हैं।

☯ आसु– आलू बुखारा किसे कहते हैं?
पासु– जिस आलू को बुखार आ जाता है, उसे आलू बुखारा कहते हैं।

बाल वाटिका

सम्पादक : सुमेधा

प्रहेलिका:

❍ पृथ्वी से भारी क्या है? आसमान से ऊँचा कौन है? हवा से तेज क्या है? और तिनकों से ज्यादा (जलाने वाला) क्या है? (महाभारत से)

❍ गणित का वह अजूबा जो किसी से भाग नहीं होता, लाख कोशिश करें घटाने की, पर घटता नहीं?

❍ न हराने से हारती है, न मिटाने से मिटती है, अन्त में वही जीतती है?

❍ कल भी था, आज भी है और हमेशा रहेगा?

❍ धन–दौलत, मान–प्रतिष्ठा होने पर भी वह क्या है जो मनुष्य को चैन से मरने नहीं देती?

❍ मनुष्य जिसे करते हुए घबराता है, फिर दोहराता है फिर उसी के परिणाम में दु:ख पाता है?

❍ उसके बिना खा नहीं सकते, पचा नहीं सकते। उसके बिना नहा नहीं सकते, क्या एक बूंद बचा नहीं सकते?

–**अतिका**, कक्षा ७ इण्डस पब्लिक स्कूल जींद

पृथ्वी से भारी माँ है। आसमान से ऊँचा पिता है। हवा से तेज मन है और तिनकों से ज्यादा जलाने वाली चिन्ता है?, शून्य, सच्चाई, समय, इच्छाएँ, पाप, पानी

विचार कणिका:

❑ आस्था गुड्डू

❖ धन की तो रक्षा करनी पड़ती है, परन्तु ज्ञान स्वयं हमारी रक्षा करता है।

❖ जो लोग पुस्तकें नहीं पढ़ते, वे उनसे बेहतर नहीं हैं, जिन्हें पढ़ना नहीं आता।

❖ दूसरों की निन्दा करना अपनी प्रशंसा करने का बेईमान तरीका है।

❖ सुधार की शुरुआत खुद से करनी चाहिए।

❖ जंग लगकर नष्ट होने की अपेक्षा घिस–घिस कर या खर्च होकर खत्म होना अधिक अच्छा है।

❖ काम की अधिकता नहीं, अनियमितता आदमी को थका देती है।

❖ क्रोधी व्यक्ति को नरक में जाने की आवश्यकता नहीं होती। वह जहाँ होता है, वहीं नरक बना लेता है।

❖ क्रोध वह कालिख है जो मनुष्य को कुरूप बना देती है।

thearyasamaj.org

मुंशी प्रेमचन्द की सादगी

❐प्रो० चन्द्रभानु आर्य, सं० न्यामती

इन्द्र विद्यावाचस्पति जी ने गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में आर्य भाषा सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए उपन्यास सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द्र को आमन्त्रित किया। प्रेमचन्द ने स्वीकृति दे दी तथा लिखा कि वे अमुक ट्रेन से हरिद्वार पहुंचेंगे। सम्मेलन की स्वागत समिति के सदस्य तथा अन्य अनेक व्यक्ति फूलमालाएँ लिए स्टेशन पहुंच गए। उन्हें मुंशीजी स्टेशन पर नहीं मिले। सभी वापस गुरुकुल लौट गए। तभी मुंशी प्रेमचन्द आते दिखाई दिए। पीछे से एक व्यक्ति उनका बिस्तर सिर पर रखे हुए आ रहा था।

इन्द्र विद्यावाचस्पति तुरन्त दौड़कर उनके पास पहुंचे। हाथ जोड़कर बोले- क्या लखनऊ की ट्रेन से आप नहीं आ पाए? प्रेमचन्द ने उत्तर दिया-मैं उसी ट्रेन से आया था। मैंने कुछ लोगों को फूल मालाएँ लिए स्टेशन पर देखा तो सोचा किसी बड़े आदमी की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। मैं चुपचाप कुली को बिस्तर थमाकर स्टेशन से बाहर आ गया और पैदल चलते हुए यहाँ आ पहुंचा हूँ।

उपस्थित लोग उनकी सादगी देख नतमस्तक हो गए।

संस्कारों का प्रभाव

❐सत्यसुधा शास्त्री

कोई भी काम करने से पहले हमें अच्छी तरह सोच विचार लेना चाहिए कि यह हमारे संस्कारों को तो नहीं दूषित करेगा।

एक लड़का बुरी संगति में फंस गया। वह चोरी करने लगा। दूसरों को तंग करने लगा। उसकी मां ने उसे बहुत समझाया पर वह बुरे कार्यों को नहीं छोड़ सका। उसकी मां ने कहा- तू न छोड़ बुरे कार्यों को। पर मेरी एक बात तो मान। जो भी बुरा काम तू करे, मुझे अवश्य बताया कर। लड़के ने यह बात मान ली। रोज आकर वह मां को बताता- आज मैंने चोरी की है, आज मैंने किसी कमजोर को पीट दिया है।-- उसकी मां उसकी बात सुनती और दीवार में एक कील गाढ़ देती।

जब बहुत सारी कील हो गई तो लड़के ने पूछा- मां, दीवार क्यों खराब कर रही हो? मां ने कहा कि बेटे ये तुम्हारे बुरे कर्म हैं। मैं तुम्हारे बुरे कर्मों का हिसाब रख रही हूँ। लड़के को चिन्ता हुई- मैंने इतने बुरे कार्य किये हैं? उसका मन बदल गया। उसने कहा- माँ, अब ये कील निकाल दो, मैं बुरे कार्य छोड़ देता हूँ। माँ ने कहा- ऐसे नहीं बेटे, तुम प्रतिदिन एक अच्छा काम करो, मैं एक कील निकाल दूंगी। बेटे ने स्वीकार कर लिया। वह एक अच्छा काम करता, घर आकर माँ को बताता, माँ एक कील निकाल देती। धीरे-धीरे सब कीलें निकल गईं। बेटे ने पूछा- माँ, मेरे बुरे कर्मों के कारण दीवार भी खराब हो गई। अब ये निशान कैसे मिटेंगे।

माँ ने कहा- बेटे, ये निशान तुम्हारे बुरे कर्मों के निशान हैं। तुमने अच्छे काम किये हैं यह अच्छी बात है। पर इससे तुम्हारे बुरे कर्म समाप्त नहीं हुए हैं। जैसे कील के निशान दीवार पर रह जाते हैं, वैसे की कर्मों के निशान हमारे मन पर रह जाते हैं। इन्हें संस्कार कहते हैं। बुरे कर्मों का फल तो हम भोगते ही हैं, अच्छे या बुरे कर्मों का अच्छा या बुरा प्रभाव हमारे मन पर सदा बना रहता है। इसलिए कोई भी काम करने से पहले हमें अच्छी तरह सोच विचार लेना चाहिए कि यह हमारे संस्कारों को तो नहीं दूषित करेगा।

लक्ष्मी का दु:ख

एक व्यापारी के घर में बहुत क्लेश रहता था। गृहक्लेश से तंग आकर लक्ष्मी घर छोड़कर जाने को तैयार हो गई। समझदार व्यापारी ने कहा- 'भले ही चले जाना, पर मेरे हाथ पर पैर रखकर जाना।' लक्ष्मी ने स्वीकार कर लिया। व्यापारी ने दान करना प्रारम्भ कर दिया। दूसरों की भलाई में प्रसन्न रहने लगा। घर में एकता बढ़ी, पुण्य बढ़ा, शांति हुई और लक्ष्मी रुक गई। लक्ष्मी बोली- अब मैं नहीं जाऊँगी। जिस दु:ख से जा रही थी, वह तो तुमने दूर ही का दिया।

thearyasamaj.org

पं० प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर पौली

स्व० पं० प्रभुदयाल प्रभाकर का जन्म ग्राम पौली जिला जींद में अग्रवाल परिवार में हुआ था। आप १८ वर्ष की आयु में आर्यसमाज से जुड़े और भजनोपदेशक के रूप में प्रचार कार्य किया। आप प्रायः आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से संबद्ध रहे। आप सिद्धहस्त कवि और प्रभावशाली वक्ता थे। भजनोपदेश के अतिरिक्त आपने अध्यापन कार्य भी किया। आपने लगभग ८५ वर्ष की आयु तक प्रचार कार्य किया।

१

बेचैनी में पड़ा हुआ संसार दिखाई दे।
कहीं नहीं प्रकाश मिले अंधकार दिखाई दे।।

खुदगर्जी का चक्कर चलता दुनिया सारी में।
बेईमानी फिरे खूब उछलती दुनिया सारी में।।
फूट का पौधा आवै फलता दुनिया सारी में।।
सच्चा प्यार कहीं ना मिलता दुनिया सारी में।।
छल छेद धोखे बाजी का प्यार दिखाई दे।।
बंधा हुआ स्वार्थ में रिश्तेदार दिखाई दे।।१।।

मनुष्य-मनुष्य के प्राणों का आज प्यासा फिरता है।
गले के ऊपर छुरी फेरता हुआ ना डरता है।
बगुला भक्ति दांव पेंच से बातें करता है।
एक मिनट आराम नहीं संकट ही भरता है।।
भूखा मरता हुआ आज साहुकार दिखाई दे।
तृष्णा पापन की दिल में भरमार दिखाई दे।।२।।

तोप गैस परमाणु बम लाखों हथियार बने।
नाश करण के लिए बुरे फिरके तैयार बने।।
शील दया संतोष नहीं जालिम खूंखार बने।
मानवता को भूल गए हैं पशु विचार बने।।
जिधर दृष्टि डालें अत्याचार दिखाई दे।
हर जगह बहती हुई खून की धार दिखाई दे।।३।।

पृथ्वी जल आकाश अग्नि वायु बेचैन हुए।
धीरज से खाली अधीर घण्टे दिन रैन हुए।।
पड़ी पाप की छाया सत्य सूर्य ग्रहण हुए।
बता रहे आसार ऋषि मुनियों के कहण हुए।।
लदा हुआ भूमि के ऊपर भार दिखाई दे।
दशों दिशा आवाज करें संहार दिखाई दे।।४।।

बेचैनी का कारण हमने जाना धर्म नहीं।
बना बना कर ढोंग चले कीना शुभ कर्म नहीं।।
दुनिया के महापुरुषों की भी मानी शर्म नहीं।
करते हैं विश्वासघात तजे दिल से भ्रम नहीं।।
प्रभुदयाल इसीलिए दुःखी नरनार दिखाई दे।
पशु और पक्षी सारे बेजार दिखाई दे।।५।।

२

बच्चा बोला माता से मैं मेला देखण जाऊँगा।
मेले में से खरीदकर कोई चीज अनूठी लाऊँगा।।

नियम नाशपती निर्मल निर्लेप नाम का पता चले।
मुनि गुनि धुनि से जाते हैं उस परमधाम का पता चले।
चिरकाल से चक्कर चलता है इस प्रोग्राम का पता चले।
कुछ अन्तर आदि अन्त नहीं इस इन्तजाम का पता चले।
कोई योगी विक्रेता होगा चरणों में शीश झुकाऊँगा।।१।।

प्रेम पपीते सेब सन्तरे, भरे हुए सत्य के रस में।
अमर बनावै ओम नाम के आनन्द फैले नस नस में।
बेर व्रत के मिल जावें तो पाँच पचीसा हो बस में।
तप तिलगोजे त्रय ताप का रहे ना रोग एकादश में।।
काजू केले कर्म पवित्र श्रद्धा सरदा खाऊँगा।।२।।

अनार अंगूर क्षमा के सब क्रोध कष्ट कट जाएगा।
शर्बत जो शहतूत शील के शठ स्वभाव मिट जाएगा।
सन्तोष सुहृदय सुमन हार शुद्ध शांत प्राज्ञ लुट जाएगा।
चंचल चित को चैन मिले चिन्ता चक्र हट जाएगा।
तीक्ष्ण होवै मति अति प्रगति का पतंग उड़ाऊँगा।।३।।

ज्ञान गुब्बारा हृदय नभ में नई किरण खिल जाएगी।
धर्म धुपंचा ध्यान धुनी में ज्योति सी मिल जाएगी।।
दुतिया द्वेष दमन दुर्गुण हो द्रव्य दया मिल जाएगी।
प्रभुदयाल अरि अंधकार की अँधियारी टल जाएगी।।
ब्रह्मचर्य का बिगुल खरीदूँ मीठी तान बजाऊँगा।।४।।

thearyasamaj.org

चौ० दलीपसिंह जी की स्मृति में शाति यज्ञ का आयोजन

–भलेराम आर्य, पूर्व प्रधान, आर्यसमाज सांघी

चौधरी दलीपसिंह (सुपुत्र चौ० बारूराम) का ९० वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनकी स्मृति में उनके सुपुत्रों ने अपने निवास स्थान- कृपाल नगर, रोहतक में बृहद् यज्ञ का आयोजन करवाया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यवीर जी शास्त्री और यज्ञ के प्रबंधक श्री महेन्द्रसिंह जी धनखड़ पूर्व डी आर ओ थे। स्व० चौ० दलीप सिंह के तीनों सुपुत्र- सर्वश्री जयसिंह हुड्डा, राजसिंह हुड्डा व वीरेन्द्रसिंह हुड्डा सपरिवार यजमान बने। यजमान परिवार पुराने समय का शिक्षित परिवार है। इनके दादा स्व० चौ० बारूराम जी सन १९३२ में बालसमन्द जिला हिसार के स्कूल में मुख्याध्यापक थे। बाद में गांव सांघी की आर्य पाठशाला की प्रबंधक समिति के प्रमुख सदस्य रहे और १९५४ की ग्राम सुधार समिति के सदस्य भी रहे। १९६५-६६ में गौशाला खिडवाली के प्रधान रहे। इस यज्ञ में भारी संख्या में परिचित, सामाजिक कार्यकर्त्ता व गांव सांघी से यज्ञप्रेमी उपस्थित थे। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यवीर सिंह जी शास्त्री ने अपने मधुर प्रवचनों में जन्म-मृत्यु, पाप-पुण्य तथा नित्य कर्मो के बारे में विस्तार से बताया। चौ० महेन्द्र सिंह धनखड़ जी इस परिवार की श्रेष्ठ परम्पराओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आप अपने पूर्वजों की तरह सामाजिक कार्यों में सदा अग्रणी रहें। यह परिवार अकाल तक में खाद्य सामग्री से गरीबों की सहायता करता रहा है, बुजुर्गों का समय समय पर सम्मान और सहायता करता है, धार्मिक संस्थाओं में सदा दान देता रहा है। ये उज्ज्वल परम्पराएँ कभी बंद नहीं होनी चाहिएँ। पर्यावरण संरक्षण के लिए इस अवसर पर एक त्रिवेणी लगाई गई। यज्ञ पर सैनी संस्था के प्रधान विजय सैनी, कंवलसिंह सैनी, डॉ० सत्यवीर सिंह, ओमप्रकाश आर्य, लाला श्रीकृष्ण भूरिया, सौरणसिंह, सत्यवान आर्य, अचलसिंह नेहरा, राजेन्द्र राठी, देवेन्द्र बालन्द, डॉ० प्रतापसिंह राठी, डॉ० आर० सी० हुड्डा, सीताराम जी, रमेश बल्हारा, डॉ० गायत्री आर्या, डॉ० सुशीला, डॉ० धर्मवीर अहलावत, डॉ० राजेश कुण्डू, गुलशन नारंग, कंवल भुटानी, चौ० हरकिशन कटवाड़ा, चौ० बनीसिंह मकड़ौली, रामभज शर्मा, रामफल शर्मा, डॉ० अमन गोहाना, डॉ० पुरुषोत्तम पालीवाल, अजयपाल हुड्डा, सुखवीर हुड्डा आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। यजमान परिवार ने सभी यज्ञप्रेमी सज्जनों का धन्यवाद किया और सबको धार्मिक साहित्य भेंट किया।

योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविर लगवाने के लिए सम्पर्क करें

योगाचार्य सूर्यदेव आर्य

आर्य युवा रत्न अवार्ड से सम्मानित

राष्ट्रीय योग प्रशिक्षक, फर्स्ट एड लेक्चरर, प्रभाकर, बी एड, एन० डी० डी० वाई०, डी० वाई० एन०, डी० स्वास्थ्य संरक्षण (हैल्थ मैनेजमेंट) मुख्य प्रशिक्षक : केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा

सम्पर्क : योग सदन, नजदीक महादेव पैट्रोल पम्प, उधमसिंह मार्ग, कृष्णा कालोनी, जींद-१२६१०२
मो० ९४१६६ १५५३६, ९४१६७ १५५३७

thearyasamaj.org

स्व० श्रीमती धर्मोदेवी की प्रथम पुण्य तिथि मनाई गई

रोहतक, स्व० श्रीमती धर्मो देवी (धर्मपत्नी श्री भलेराम आर्य) की प्रथम पुण्य तिथि उनके निवास स्थान- एफ-८, इन्द्रप्रस्थ कालोनी, रोहतक में मनाई गई। इस अवसर पर श्री महादेव शास्त्री के ब्रह्मत्त्व में यज्ञ किया गया। यजमान का स्थान उनके सुपुत्र श्री प्रदीपकुमार एवं पुत्रवधु श्रीमती पूनम रानी ने ग्रहण किया। इसी दिन फाल्गुन मास की पूर्णिमा तथा होली का पर्व भी था। श्री महादेव शास्त्री ने श्रीमती धर्मो देवी के किसी की निन्दा चुगली न करना, झगड़ा व अनावश्यक बहस न करना और धार्मिक कार्यों में सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहना, आदि गुणों को धारण करने के लिए यजमान दम्पती को संकल्प करवाया। यजमान परिवार ने उनकी स्मृति में डॉ० स्वरूप सिंह मॉडल स्कूल सांघी में एक त्रिवेणी और अपने खेत में ८० पौधे लगवाए। भविष्य में बच्चों के जन्मदिन आदि पारिवारिक उत्सवों पर भी वृक्षारोपण करने का संकल्प किया गया। यज्ञ के पश्चात् सभी यज्ञप्रेमियों को वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

क्या भारतवर्ष का इतिहास
केवल पराजय का इतिहास है?

क्या भारतीय कायर हैं?

क्या बाबर को महाराणा सांगा ने आमंत्रित किया था?

क्या अकबर महान था?

इत्यादि अनेक प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए पढ़िये

राजेशार्य आट्टा की शोधपूर्ण कृति

स्वाभिमान का प्रतीक मेवाड़

मूल्य : १५ रुपये मात्र (डाकखर्च अतिरिक्त)
प्राप्ति स्थान
शांतिधर्मी कार्यालय, जींद-१२६१०२

नया उत्साह! ओ३म् नई खुशी!!

MAHARSHI DAYANAND EDUCATION INSTITUTE, BOHAL

Under the Control & Management of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
(Establish with the Permission of Haryana Govt. vide Sr. Act XXI of 180 Govt. of India)

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED ORGANIZATION

202, OLD HOUSING BOARD, BHIWANI-127021 (HAR)

JOB ORIENTED SELF EMOLOYED I.T.I., N.T.T. & OTHER DIPLOMA COURSE

करने व फ्रेंचाईजी लेने के लिए सम्पर्क करें।

संस्थान के सभी कोर्स आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी बनाने व रोजगार दिलाने में सहायक हैं।
संस्थान से I.T.I. कोर्स किये अनेक विद्यार्थी सरकारी/गैर सरकारी विभागों में कार्यरत हैं।

बोहल कार्यालय सम्पर्क सूत्र :
09728004587, 09813804026
Website : www.grngo.org

सचिव : नरेश सिहाग, एडवोकेट
चैम्बर नं. 175, जिला अदालत, भिवानी-127021 (हरि.)
09255115175, 09466532152

thearyasamaj.org

खड़खडी (हापुड़) का वार्षिकोत्सव

35 दम्पतियों ने की पूर्णाहुति

त्यागी परिवार की चौपाल के आकर्षक पंडाल में बृजभूषण त्यागी जी ने अपने मित्र रवींद्र त्यागी व सुभाष, संजीव, सोनाथसिंह जी व ग्रामवासियों के सहयोग से त्रिदिवसीय वेद कथा का पूर्ण सफल आयोजन किया। प्रतिदिन तीन सत्रों में भजनोपदेशक श्री संदीप वैदिक के मधुर भजनोपदेश व आचाय श्री आनंद पुरुषार्थी जी का उपदेश होता था। विषय वैदिक व दार्शनिक मान्यताओं से सम्बंधित रहे। पूर्णाहुति पर 35 दम्पतियों ने 11 यज्ञ वेदियों पर आहुतियाँ प्रदान की। सांसद व बी जे पी के उम्मीदवार श्री राजेंद्र अग्रवाल जी ने पूर्णाहुति के समय कथा में आकर वैदिक धर्म व कार्यक्रम के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। हापुड़ आर्यसमाज के मंत्री राधारमन जी, पूर्व प्रधान आनंद आर्य जी, महिला आर्यसमाज की बहनों सहित सभी ने सहयोग किया। मंच का सञ्चालन राधारमण आर्य जी ने किया। आसपास के समस्त ग्रामीण अंचल से आर्यजनों के आने से कार्यक्रम की शोभा में पर्याप्त वृद्धि हुई।

राधारमण आय

मंत्री, आर्यसमाज हापुड़, उत्तर प्रदेश

1857 के क्रांतिकारियों का स्मृति दिवस

जींद रेलवे रोड आर्यसमाज मन्दिर में 1857 के शहीदों की स्मृति में तीन दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया। 9 से 11 मई तक आयोजित समारोह में पानीपत से पधारे आचार्य ओमप्रकाश शास्त्री ने सुमधुर प्रेरक प्रवचन किये। सभा के सुयोग्य भजनोपदेशक पं0 सत्यपाल मधुर के प्रभावशाली भजनोपदेश हुए। समारोह में अलग अलग सभाओं में चन्द्रभानु आर्य, सम्पादक शांतिधर्मी, प्रो0 ओमकुमार आर्य उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, चौ0 अभयसिंह आर्य, कर्णसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज रामनगर, विनीता गुलाटी प्रधान आर्य समाज जींद शहर, संजय आर्य मंत्री जिला वेद प्रचार मण्डल, ईश्वर आर्य प्रचार मंत्री व आर्यवीर दल के मंडलपति यज्ञवीर आर्य सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। 11 मई के मुख्य कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नगर परिषद् के पूर्व चेयरमैन श्री विनोद आशरी ने कहा कि जो देश अपने देशभक्त क्रांतिकारियों को भुला देता है वह कभी उन्नति नहीं कर सकता। आज हम उन्हीं की वजह से आजादी की हवा में सांस ले रहे हैं। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों तक का मोह नहीं किया और देश के लिए हंसते हंसते अपना बलिदान किया। उनसे पूर्व श्री सहदेव समर्पित ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने मंगल पाण्डे, नाना साहब, राव तुलाराम और राजा नाहरसिंह, अजीमुल्लाखान, रानी लक्ष्मीबाई की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश के स्वाभिमान के लिए आठ साल से अस्सी साल तक के लोग मरने मिटने का तैयार थे। आर्यसमाज के प्रधान मा0 सतबीर सिंह जुलानी ने क्रांतिकारियों का श्रद्धांजली अर्पित की। मंत्री मा0 पृथीसिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया। समारोह में मा0 हरगोविन्द, कृष्णलाल गुप्ता, वेदपाल आर्य कोथ, सत्या भाटिया, सुमित्रा देवी, पृथीसिंह चहल, वैद्य दयाकिशन चतरसिंह आदि वयोवृद्ध समाजसेवियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया।

मंत्री आर्यसमाज,

रेलवे रोड, जींद जंक्शन

स्वामी रामदेव जी के संन्यास दीक्षा दिवस पर

भारत स्वाभिमान झज्जर द्वारा २१ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन

नौंवी कक्षा की छात्रा बनी यज्ञ की ब्रह्मा

प्रति वर्ष की भांति स्वामी रामदेव जी महाराज के संन्यास दीक्षा दिवस व रामनवमी पर्व पर भारत स्वाभिमान बाल ओजस् योग समिति द्वारा बाबा प्रसाद गिरि मन्दिर में २१ कुण्डीय हवन का आयोजन किया गया। भारत स्वाभिमान झज्जर के सहसंयोजक श्री रामनिवास योगार्थी के निर्देशन में प्रशिक्षित बच्चों ने परिवार के सदस्यों के साथ आहुतियाँ दीं। इस यज्ञ का ब्रह्मत्त्व नवीं कक्षा की छात्रा कुमारी कनिका ने किया। सेवाव्रती ब्र० इन्द्रजीत जी ने गुरु की महिमा पर प्रकाश डाला। उपस्थित महानुभावों के स्वागत में बच्चों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर ओजस योग समिति के बाल योगी कु० पारुल, सोनम, शशांक, अक्षांश, श्रुति, नन्दिनी, प्रिया, आरती, सविता, अनमोल, काजल, मोनू, अभिषेक व इनके अभिभावकों सहित सूबेदार भरतसिंह, विजय आर्य, प्रवीण, नवीन, राजीव, पीयूष आर्य, डॉ० राजेश बंसल, राजवीर आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

संकल्प शक्ति का चमत्कार– पृष्ठ २२ का शेष

जब एक मनुष्य अपने अन्दर से सभी जीवों के प्रति शत्रुता के विचार निकालकर सभी की भलाई और सबके सुख की प्रार्थना करता है, तब उसको उसके बदले में विश्वमात्र का प्रेम प्राप्त होता है और तब संसार का कोई पदार्थ उसके लिए दु:खदायी नहीं रहता।

अत: सब की सुख–समृद्धि व शांति की कामना के लिए प्रात: सायं संकल्पशक्ति के साथ इस प्रकार की प्रार्थना करनी चाहिए, इससे हम सबका भला होगा।–
ओं द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्विश्वेदेवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्वं शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि।

हे सर्वरक्षक प्रभु! द्युलोक शान्तिमय है, अन्तरिक्ष शांतिमय है, पृथिवी शान्तिमय है, जल व प्राण शान्तिदायक हैं, सभी औषधियाँ सुखदायी हैं, सब विद्वान लोग उपद्रवनिवारक हैं, आपकी वेदवाणी सुखदायी है, सभी वस्तुएँ शान्तिकारक हैं, स्वयं शान्ति भी शान्तिमय है। प्रभु! वही शान्ति मुझ उपासक को भी प्राप्त होवे।

वास्तव में हमारी दुनिया वह नहीं है जिसको हम मानते हैं, बल्कि वह है जिसका हम विचार करते हैं, संकल्प करते हैं। मानव विचारों का पुतला है। जैसे इसके विचार होते हैं वैसा ही वह बन जाता है। अत: मनुष्य को निराशावादी न होकर सदैव सद्विचारों के साथ आशाजनक, प्रसन्नता, स्वास्थ्य और सफलता के विचारों को शुभ संकल्प के साथ मन में धारण करना चाहिए। सुख और आशा की तरंगे ही रक्त की गति पर उत्तम प्रभाव डालेंगी और शुद्ध व लाल करके स्वास्थ्य के सुप्रभाव को पूरे शरीर में बांट देंगी।

धार्मिक और लौकिक दोनों विषयों में मनुष्य उतना ही सफल होता है जितना संकल्प दृढ़ होता है। यदि कोई किसी कार्य में असफल है, इसका कारण उसका दुर्भाग्य नहीं, बल्कि उसके संकल्प की निर्बलता है। मनुष्य के अन्दर यह बहुमूल्य गुप्त शक्ति ऐसी है कि जो कोई इससे काम लेना शुरू कर देता है उसको वह महान् बना देती है। मानव के संकल्प में अद्भुत शक्ति है, यदि आप जीवन में सफल होना चाहते हैं तो इस शक्ति को अपने अन्दर उत्पन्न और विकसित करें। जो मनुष्य जैसा बनना चाहता है, उसको दृढ़ संकल्प के साथ अपने अन्दर वैसे ही विचार उत्पन्न करने चाहिएँ। जब मनुष्य अपने शुभ संकल्प व दृढ़ विचार के साथ खड़ा हो जाता है तब कोई वस्तु उसको अपने उद्देश्य से नहीं रोक सकती। ऐसे पुरुषार्थी मनुष्यों की सहायता के लिए प्रकृति अपना कार्य करती है। एक साधारण पुरुष भी अपनी आत्मिक संकल्प शक्तियों से काम लेकर महान् बन जाता हे। संसार में ऐसे बहुत से महापुरुष हुए हैं जो साधारण से महान बन गए। महर्षि दयानन्द सरस्वती को साधारण साधु से वर्तमान काल के ऋषि बनाने वाली उनकी संकल्पशक्ति ही थी। सारी दुनिया उनके विचारों से विरोध रखती थी, परन्तु जब वह मनस्वी एक बार अपने क्षेत्र पर आरूढ़ हो गया तो कोई भी मनुष्य उनके सम्मुख खड़ा न हो सका। इसका कारण उनकी अगाध विद्या ही नहीं थी, बल्कि दृढ़ संकल्पशक्ति और उस शक्ति में पूर्ण विश्वास होना था। इसी संकल्पशक्ति के सहारे श्री लाल बहादुर शास्त्री व इब्राहिम लिंकन जैसे साधारण मनुष्य भी महान् व्यक्ति बन गये।

दृढ़ और बलवान संकल्पशक्ति के कारण मनुष्य में ऐसी योग्यता आ जाती है कि वह अपने विचारों को बहुत बड़ी शक्ति दे सकता है। अपने लक्ष्य पर फिर वह अपने विचार को उस समय तक स्थिर रखता है, जब तक उसका अभीष्ट प्राप्त नहीं हो जाता। जो अपना दृढ़ विचार बनाकर फिर दूसरों की दृढ़ सम्मति के कारण उसे बदल देता है तो उससे भी उसकी हीन संकल्पशक्ति का पता लगता है कि वह दूसरों की सम्मति का दास है। उसे कदम–२ पर असफलता देखनी पड़ती है। इसीलिए संकल्पशक्ति का महत्त्व समझना चाहिए, किन्तु हठ, दुराग्रह और उच्छृंखलता को ही संकल्प या विचार शक्ति नहीं समझ लेना चाहिए। संकल्प शक्ति और हठादि में महान् अन्तर है। पहली आचार की दृढ़ता का प्रतीक है और दूसरा उसकी निर्बलता का परिणाम।

संकल्प शक्ति को पूरा विकास देने के लिए दृढ़ आत्म विश्वास की आवश्यकता है और आत्मविश्वास की दृढ़ता आस्तिकता अर्थात् ईश्वर भक्ति से होती है। जब मनुष्य सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ ईश्वर पर पूर्ण विश्वास और उसका सहारा लेकर सभी कार्यो को उसके समर्पण करते हुए अनासक्त और निष्काम भाव से उसके लिए ही अपने को केवल उसका एक साधन समझकर कर्त्तव्य रूप से करता है तो उसकी स्वयं अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियाँ भी अगाध और असीम हो जाती हैं। यही कारण है कि ईश्वर भक्तों द्वारा जो महान् कार्य और अद्भुत चमत्कार अनायास साधारणतया प्रकट हो जाते हैं, उनके अनुकरण करने में संसार की सारी भौतिक शक्तियाँ अपना बल लगाकर भी असमर्थ रहती हैं।

अत: सत्पुरुषों के सारे संकल्प, इच्छायें ईश्वर के समर्पण और उसी के प्रेरणा से होते हैं, इसलिए वे जो संकल्प करते हैं, वे पूर्ण होते हैं।

thearyasamaj.org

चिन्ता चिता समान है-- पृष्ठ २० से आगे

जाती है, कई लोगों का दूसरों के साथ झगड़ा हो जाता है और कई लोग चिंताग्रस्त होकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर देते है। अत: चिंता रूपी दैत्य पर जितनी जल्दी विजय पाई जाये, उतना ही अच्छा है। जब भी किसी बात की चिंता लगे उसके कारण का पता करके समाधान करने की कोशिश करनी चाहिये। संयम से काम लेना चाहिए। कुछ चिंतायें क्षणिक तथा निर्मूल होती हैं। कुछ चिंतायें गलतफहमी के कारण पैदा होती हैं, जिन्हें आसानी से दूर किया जा सकता है। जब कभी भी किसी बात की चिंता सता रही हो तो अपने बुजुर्गों, हितैषियों, मित्रों तथा शुभचिंतकों से विचार विमर्श करके बोझ को हल्का किया जा सकता है। चिंता चिता समान है। हमारे में से कौन जीते जी इस चिता में भस्म होना चाहेगा? अत: चिताओं से ड़रना नहीं चाहिये। चिंता मनुष्य के धैर्य की परीक्षा लेकर उसे मजबूत बनाती हैं। समझदार तथा हिम्मत वाले आदमी चिंता रूपी परीक्षा में से सदा पास हो जाते हैं और बाकि फेल हो जाते हैं। आओ चिंता रूपी भूत को अपने जीवन से भगायें और सदा सुख की जिंदगी बितायें।

दीप प्रकाशन

(वैदिक साहित्य के प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता)

शांतिधर्मी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित साहित्य के लिए व शांतिधर्मी की वार्षिक, आजीवन सदस्यता के लिए भी संपर्क कर सकते हैं।

दीपचन्द आर्य

मोबाईल-94161 94371

मिलने का स्थान-
आर्यसमाज घंटाघर, भिवानी

क्रांति की बलिवेदी पर-- पृष्ठ १७ का शेष

शचीन्द्रनाथ सान्याल के साथ मिलकर 'हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ' नामक एक नया दल बनाया। आगे चलकर राम प्रसाद बिस्मिल और भगतसिंह से उनके इतने घनिष्ठ सम्बन्ध हो गये कि उन्हें जेल से छुड़ाने के लिए आजाद, भगतसिंह आदि अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार हो गये थे। जोगेशचन्द्र चटर्जी ने ही भगतसिंह को अलीगढ़ जिले के एक गाँव में विद्यालय का मुख्याध्यापक लगवाया था।

पार्टी कार्य से उन्हें कानपुर, मद्रास आदि आना जाना पड़ता था। मद्रास से कलकत्ता लौटने पर गुप्तचर विभाग के सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया और प्रेसीडेंसी जेल में डाल दिया। (१९२४ ई०) कुछ दिन ब्रह्मपुर जेल में रखने के बाद इन्हें हजारीबाग (बिहार) भेज दिया गया। परिवर्तन के वक्त इन पर जो अत्याचार हुए, उसकी निन्दा के लिए बंगाल कौंसिल में बड़ी आंधी उठी थी। यहाँ तक कि कौंसिल की कार्यवाही स्थगित करने तक का प्रस्ताव पास हुआ। उनके विरुद्ध कोई मामला नहीं बन रहा था। उन्हीं दिनों ९ अगस्त १९२५ को काकोरी कांड हो गया तो पुलिस ने झूठे ही इनका नाम काकोरी काण्ड में जोड़ दिया और इन्हें आजीवन कारावास की सजा (जो पहले दस साल की थी) दिलवाकर अंडेमान भेज दिया।

सजा के बाद इन्हें आगरा सैंट्रल जेल में रखा गया। जब इन्हें लखनऊ जेल से आगरा ले जाया जा रहा था, तो चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह आदि ने इन्हें छुड़ाने की योजना बनाई, पर उसे कार्यान्वित नहीं किया जा सका, क्योंकि उसमें चटर्जी की जान को खतरा भी हो सकता था। ग्यारह साल कालापानी जेल की यातनाएँ सहने के बाद वे १९३६ ई० में भारत लाये गये। सन् १९३७ में कांग्रेसी मंत्रिमण्डल बनने के बाद उन्हें जेल से रिहा किया गया। इसके बाद भी वे शांत नहीं बैठे। क्रांतिकारी पक्ष का समर्थन करने के कारण उन्हें बाद में भी कई बार जेल जाना पड़ा, पर आजादी के बाद जो कुछ देश में हुआ, उसे देखकर उन लोगों को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। क्योंकि-

इतिहास के शहीद गुनहगार हो गये,
गद्दार कल के आज वफादार हो गये।
बातों का सिर्फ करके जमा खर्च यार लोग,
ऐसे उठे सड़क से कि सरकार हो गये।।

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-०४-२०१४ को प्रकाशित।

thearyasamaj.org

अन्ततः अनाथालय में हो रहा धर्मान्तरण

❑ विनोद बंसल, मीडिया प्रमुख, विहिप, नई दिल्ली, मो0 9810949109

दिल्ली में महिला उत्पीडन की घटनाएँ तो बहुत सुनी हैं किन्तु उनको बचाने और आत्म निर्भर बनाने वाले हाथ भी देश की राजधानी में कम नहीं है। पिछले दिनों दक्षिणी दिल्ली का एक मन्दिर ऐसी ही कहानी का गवाह बना। जिस कन्या का विवाह इस मंदिर में सम्पन्न हुआ वह अपनी चार अन्य महिला साथियों के साथ एक ऐसी दशा से गुजरी थी जिसकी कल्पना मात्र से ही रूह कांप जाए। इस अनुपम विवाह समारोह में सपत्नीक शामिल होने का गौरव मुझे भी प्राप्त हुआ। समारोह में उपस्थित वर-वधू के परिजनों, रिश्तेदारों, मित्रों व शुभचिंतकों के साथ भगिनी निवेदिता सेवा न्यास के महामंत्री श्री महावीर प्रसाद गुप्ता की सक्रियता तथा चेहरे की खुशी ऐसा लग रहा था जैसे यह विवाह किसी और का नहीं उनकी सगी बेटी का हो। बीस अप्रैल को दक्षिणी दिल्ली के खिडकी एक्सटेंशन स्थित हनुमान मंदिर में इन्होंने उस बेटी का कन्यादान अपने हाथों से सम्पन्न कराया। साथ में बैठी थीं वैदिक विदुषी श्रीमती विमलेश आर्या जिन्होंने उपस्थित पुरोहित के साथ वेद मंत्रों का सस्वर गायन किया।

एक तथाकथित अनाथालय में चल रही गंभीर महिला शोषण की घटना का पर्दाफाश गत 4 अप्रैल को तब हुआ जब विजन फॉर ओएसिस वेव्ज़ सोसायटी द्वारा द्वारिका सेक्टर-7 में संचालित 'उम्मीद' नामक शेल्टर होम में रह रही एक युवती किसी तरह भागकर थाने पहुंची। उसने अपने वकील अशोक चैतन्य को भी वहाँ बुला लिया। युवती का आरोप था कि उसे एवं उसकी साथियों को शेल्टर होम अध्यक्ष सलमा फ्रांसिस और वार्डन एलिजाबेथ थॉमस जबरन 'क्रॉस' पहनाते हैं, उनके देवी देवताओं के लिए अभद्र भाषा का प्रयोग करने के साथ व्रत के खाने में मांस (यहाँ तक कि गोमांस भी) होता है। मंदिर जाने व पूजा से उन्हें रोका जाता है। उन्होंने जब से इसका विरोध किया है तब से उनको तमाम तरह की यातनाएँ दी जा रही हैं। पीडितों में एक 54 वर्षीय महिला भी शामिल थी।

शिकायतकर्ता युवतियों में से एक एमबीए पास है तथा मानव संसाधन में स्नातकोत्तर कर रही है। दूसरी बीए बीएड है। उसका कहना है कि उसने अपनी मुस्लिम सहेली के साथ नवरात्रों पर व्रत रखे थे। इसके चलते उनकी पिटाई की गई। जबरन खाना खिलाया गया। गले में पहनी माला को भी तोड़ दिया गया। इसके बाद उसने पुलिस के पास जाने का निर्णय लिया। वहीं, मुस्लिम युवती का भी कहना है कि उनसे रोज जबरन ईसाई प्रार्थना कराई जाती थी। खाने में गोमांस परोसे जाने की जानकारी मुस्लिम युवती से ही अन्य युवतियों को मिली।

द्वारिका (साउथ) पुलिस थाने के अन्तर्गत खुले आम हो रहे धर्मांतरण की घटना को गंभीरता से लेते हुए विश्व हिन्दू परिषद ने पुलिस व प्रशासन द्वारा इस सम्बन्ध में बरती जा रही उदासीनता पर गहरा क्षोभ व्यक्त किया। विहिप कार्यकर्ताओं की सक्रियता के चलते पीड़ित महिलाओं को ईसाई मिशनरियों के चंगुल से तो छुड़ा लिया गया किन्तु देर रात दो बजे तक उन सभी महिलाओं को पुलिस ने थाने में ही बिठाए रखा। अपराधियों को पकड़ने की बात तो दूर, एफआईआर भी तब तक दर्ज नहीं की गई जब तक विहिप, बजरंग दल के कार्यकर्ता तथा स्थानीय विधायक श्री धर्म देव सोलंकी, राजेश गहलोत व सतप्रकाश राणा के साथ भाजपा जिला अध्यक्ष श्री विजय पण्डित सड़कों पर उतर पुलिस के विरुद्ध प्रदर्शन न करने लगे। बाद में पुलिस ने पाँचों महिलाओं को शेल्टर होम की बजाय निर्मल छाया होम भेज दिया। इनमें एक मुस्लिम युवती भी शामिल है। सोमवार सात अप्रैल को राज्य महिला आयोग के समक्ष पीड़ित युवतियों के बयान भी दर्ज कराए गए। बाद में महिला आयोग की पहल पर इन सभी पीड़िताओं को विहिप की प्रेरणा से संचालित भगिनी निवेदिता सेवा न्यास को सौंप दिया गया। न्यास ने इन सभी महिलाओं को आत्मनिर्भर बना कर समाज में उचित स्थान दिलाने का संकल्प लिया है।

इस पूरे घटनाक्रम में विश्व हिंदू परिषद के जिला मंत्री श्री कमलेश शुक्ला, विभाग मंत्री श्री शांति स्वरूप, समाजसेवी श्री भारत बत्रा व श्री ब्रह्मदत्त भारद्वाज की भूमिका सराहनीय थी। यह घटनाक्रम पुलिस व प्रशासन पर यह गंभीर प्रश्नचिन्ह लगाता है कि देश की राजधानी में धर्मांतरण की घटनाओं को आखिर कौन प्रश्रय दे रहा है?

thearyasamaj.org

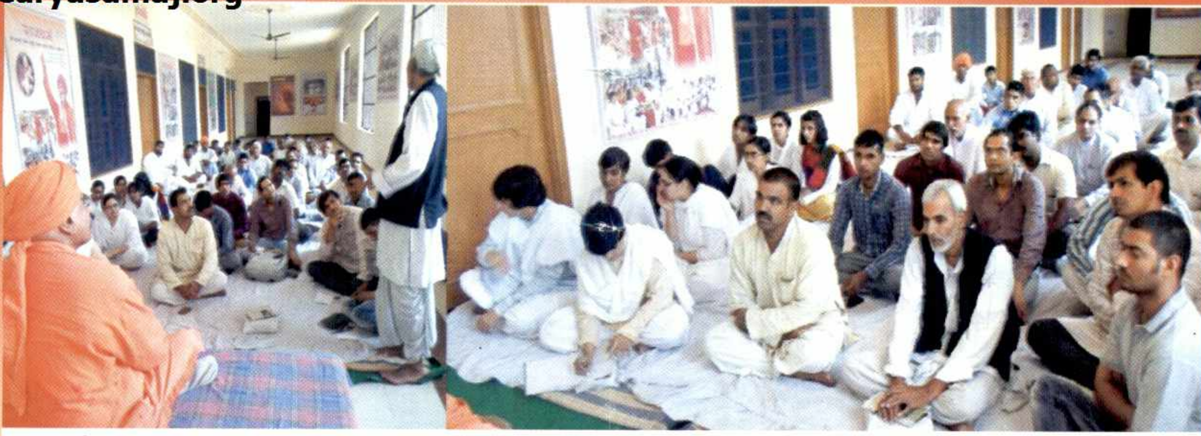

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटोली में विशिष्ठ कार्यकर्ताओं की बैठक की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी। यह बैठक ग्रीष्मकालीन शिविरों की तैयारी के संदर्भ में की गई। परिषद द्वारा खटकड़ जिला जीन्द में युवकों का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर २ से ८ जून तक लगाया जा रहा है।

झज्जर में स्वामी रामदेव जी के दीक्षा दिवस पर २१ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया।

आर्य समाज जीन्द जंक्शन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट करते पदाधिकारी।

नवप्रगति स्कूल डाहौला के विजेता विद्यार्थी प्राचार्य और अध्यापकों के साथ।

खड़खड़ी में आयोजित वेदकथा महोत्सव में बहुकुण्डीय यज्ञ करवाते आचार्य आनन्द पुरूषार्थी जी।

thearyasamaj.org

ओ३म्

शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्रिका है

इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरुचिपूर्ण सामग्री होती है।

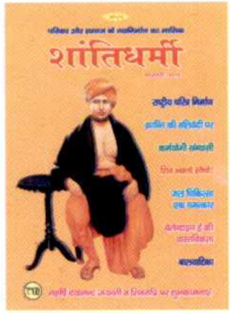

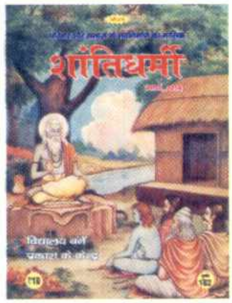

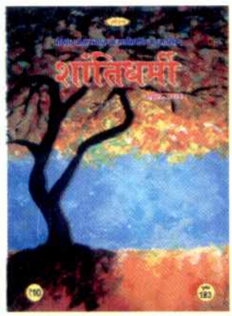

- **शांतिधर्मी** में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।
- **शांतिधर्मी** भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।
- **शांतिधर्मी** वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का संदेशवाहक है।
- **शांतिधर्मी** उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।
- **शांतिधर्मी** स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।
- **शांतिधर्मी** प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी-व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

शांतिधर्मी पढ़िये-

अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

शान्तिधर्मी कार्यालय

756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)
जीन्द-126102 (हरियाणा)
मो. 09416253826 E-mail : shantidharmijind@gmail.com